जैन गजट को शीघ्र आवश्यकता है

1895 से प्रकाशित हो रहे जैन समाज के सर्वाधिक प्रसार संख्या वाले जैन गजट साप्ताहिक के सदस्य बनाने, विज्ञापन बुक करने एवं जैन समाज के धार्मिक एवं सामाजिक आयोजनों के समाचार भेजने हेतु देश भर में जगह जगह संवाददाताओं की शीघ्र आवश्यकता है। आकर्षक कमीशन एवं अन्य लाभ योग्यतानुसार। आवेदन जैन गजट के वाट्सऐप नं. 7505102419 या 9415108233 पर भेजिये। आवेदन प्राप्त होने पर आपसे संपर्क किया जावेगा।

संपर्क - जैन गजट, ऐश बाग, लखनऊ,
मो. 9415008344, 7607921391, 7505102419,
Email- jaingazette2@gmail.com
www.jaingazette.com

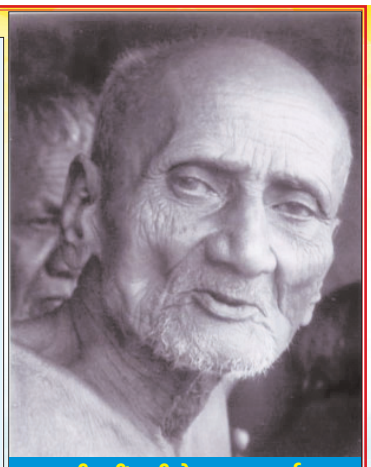

बीसवीं सदी के प्रथमाचार्य
चारित्र चक्रवर्ती
परम पूज्य आचार्य श्री शांति सागर जी

आचार्य विशुद्ध सागर जी होंगे विराग सागरजी के पट्टाचार्य 03

1 दिसम्बर 1895 से प्रकाशित जैन समाज का सर्वाधिक प्रसार संख्या वाला साप्ताहिक

जैन गज़ट

www.Jaingazette.com

वर्ष 30 अंक 35 कुल पृष्ठ 12 लखनऊ, प्रकाशन तिथि- सोमवार 08 जुलाई 2024, वीर नि. संवत् 2550

Unit : Sri Bharatvarshiya Digamber Jain Mahasabha jaingazette2@gmail.com

आचार्य विरागसागर महाराज की हुई समाधि

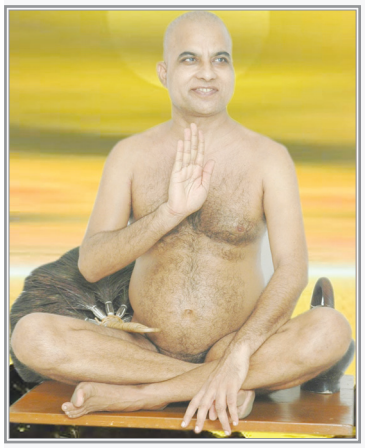

जालना, 4 जुलाई। दिगम्बराचार्य विरागसागर जी महाराज का जालना (महा.) के पास में 04 जुलाई की मध्य रात्रि को संल्लेखनापूर्वक समाधिमरण हो गया। प्राप्त जानकारी के अनुसार बुंदेलखंड के प्रथम दिगंबराचार्य विराग सागर महाराज का जन्म मध्य प्रदेश के सागर जिले में ग्राम पथरिया में 02 मई 1963 को श्रावक श्रेष्ठी कपूरचंद श्यामा देवी जैन के परिवार में हुआ था। आपका गृहस्थ अवस्था का नाम अरविंद जैन था। आपकी क्षुल्लक दीक्षा 02 फरवरी 1980 को वुढार जिला शहढोल में आचार्य श्री सन्मति सागर महाराज के कर कमलों द्वारा हुई थी। आपको मुनि दीक्षा 09 दिसंबर 1986 को महाराष्ट्र के औरंगाबाद में आचार्य श्री विमलसागर महाराज के द्वारा प्रदान की गई। आचार्य श्री का 2024 का पावन वर्षायोग महाराष्ट्र के जालना में होना था, जिसके लिए वे अपने शिष्यों के साथ पद विहार कर रहे थे। 02 जुलाई को महाराष्ट्र के जालना के नजदीक देवमूर्ति के ग्राम सिदखेड़ा में पदविहार करते समय अचानक विराग सागर महाराज का स्वास्थ्य खराब हो गया। उन्होंने तुरंत संलेखना समाधि ग्रहण की और 03/04 जुलाई की मध्य रात्रि को 02.30 बजे इस नश्वर शरीर को त्याग कर देवलोक को गमन किया। उनकी समाधि की खबर सुनते ही जैन समाज में शोक की लहर दौड़ गई। अंतिम संस्कार के समय दर्शनों के लिए जनसैलाब उमड़ पड़ा। हजारों की संख्या में लोग उनके अंतिम दर्शनों के लिए पहुंचे। आचार्य श्री विरागसागर जी महाराज ने अपने संयमी जीवनकाल में 350 से अधिक दीक्षाएं प्रदान कीं। आपके दीक्षित मुनि, आर्यिकायें पूरे विश्व में अहिंसा, शाकाहार और जैन धर्म के सिद्धांतों का प्रचार-प्रसार कर रहे हैं। आपने अनेकों पुस्तकों का लेखन किया, साथ ही अनेकों शास्त्रों की टीकाएं लिखीं। पूज्य गुरुदेव के समाधिमरण से सम्पूर्ण जैन समाज में शोक व्याप्त है।

61 वर्षीय आचार्य श्री विरागसागर जी का जीवन परिचय- आपका जन्म 2 मई 1963 पथरिया जिला दमोह में श्रेष्ठि श्री कपूर चंद जी (समाधिस्थ मुनि श्री विश्व वंद्य सागर जी) एवं माता श्रीमती श्यामा देवी (समाधिस्थ आर्यिका श्री विशांतमति) के यहां पथरिया जिला दमोह में हुआ। आपका बचपन का नाम श्री अरविंद कुमार जैन था। आपने 5 तक की शिक्षा पथरिया में प्राप्त करने के बाद सन 1974 में कटनी में श्री शांति सागर निकेतन संस्कृत विद्यालय में धार्मिक शिक्षण 6 वर्ष प्राप्त कर 11 तक की लौकिक शिक्षा तथा शास्त्री की परीक्षा उत्तीर्ण की। आपने 20 फरवरी 1980 को 17 वर्ष की उम्र में बुढ़ार में आचार्य श्री सन्मति सागर जी से क्षुल्लक दीक्षा ली, आपका नाम श्री पूर्ण सागर किया गया। आपने 9 दिसंबर 1983 को औरंगाबाद में मुनि दीक्षा आचार्य श्री विमल सागर जी से प्राप्त की, आपका नाम श्री विराग सागर जी किया गया। आपको आचार्य पद 9 नवंबर 1992 को 29 वर्ष की उम्र में सिद्धक्षेत्र द्रोणगिरी में दिया गया। विशेष संयोग - आपके जीवन में व V का बहुत अद्भुत संयोग रहा। आपके दीक्षा गुरु आचार्य श्री विमल सागर जी, आप आचार्य श्री विराग सागर जी आपके सभी दीक्षित शिष्यों के नाम भी व V से प्रारंभ होते हैं। श्रमण परम्परा का यह एक कीर्तिमान है कि किसी दीक्षा आचार्य और उनके शिष्यों के नाम का प्रथम अक्षर एक समान हो। आपके द्वारा 300 से अधिक अनेक दीक्षाएं दी गई हैं। कुछ वर्षों पूर्व की जानकारी अनुसार 9 आचार्य, 89 मुनि दीक्षा, 4 गणिनी, आर्यिका 71 दीक्षा, एलक 5 दीक्षा, 23 क्षुल्लक तथा 29 क्षुल्लिका दीक्षा सहित 230 दीक्षा दी गईं।

शेष पृष्ठ 3 पर.....

WONDERFUL 12 Nights / 13 Days
EUROPE
20 Sep, 3 Oct, 3 Nov
यूरोप जैन मंदिर के दर्शन
FRANCE, PARIS, ITALY
AUSTRIA, AMSTERDAM
GERMANY, SWITZERLAND
100% Pure Vegetarian Jain Food
VAYUDOOT WORLD TRAVELS PVT. LTD.
Mob : +91 9313338256, 9810408256, 9818312056
Email : vayudoottravels@gmail.com • Website: www.vayudoottravels.in

अति प्राचीन मनोरथ पूर्ण 1008 श्री मुनिसुव्रतनाथ अतिशय क्षेत्र, प्रभुसर हस्तेड़ा जयपुर

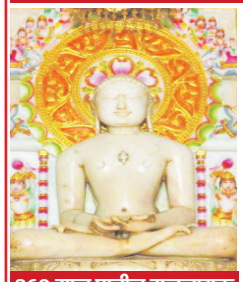

869 साल प्राचीन मूलनायक
श्री मुनिसुव्रतनाथ प्रतिमा

शांतिधारा का प्रसारण

LIVE
आरती : 7:15 - 7:45 AM
शांतिधारा : 8:30 AM

@jainmandirhasteda

नामांकित शांतिधारा पुण्यार्जन के लिए संपर्क करें:
अमित शर्मा (Manager)-9783016885

हस्तेड़ा जैन मंदिर दूरी-दिल्ली से 250 किमी.एवं जयपुर से 65 किमी.
संपर्क सूत्र:
नितिन कुमार पाटनी (मंत्री) 9001255955
मनीष जी गंगवाल (कोषाध्यक्ष) 095880-20330

नामांकित शांतिधारा के लिए किसी भी राशि का आग्रह नहीं है।

JK MASALE SINCE 1957

Buy online on jkcart.com

– Breakfast Matlab –
JK POHA
Shudh Khao Swasth Raho...

23 years of Educational Excellence

ADMISSIONS OPEN 2024-25

TEERTHANKER MAHAVEER UNIVERSITY
Moradabad

Accredited with NAAC A Grade

12-B Status from UGC

NAAC GRADE A ACCREDITED UNIVERSITY

SCAN HERE TO APPLY

Apply Online www.tmu.ac.in

The National Board of Accreditation accredited B.Tech. Computer Science & Engineering programme of Faculty of Engineering

Approved under Section 2(f) & 12(B) of the UGC Act, 1956

1st TOP PRIVATE MBBS UNIVERSITY IN UP IN THE IIRF RANKINGS 2023

4 HIGHEST RATING INSTITUTION INNOVATION COUNCIL (IIC) Innovation Cell, Ministry of Education Govt. of India

4th RANK OF PHARMACY COLLEGE IN UP BY IIRF 2023

DIPLOMA | UG | PG | PhD PROGRAMMES OFFERED

MEDICAL
- MBBS • MD • MS (All Specializations) (Admissions through UP NEET Counselling)

B.Sc. (Medical)
- Anatomy • Physiology • Biochemistry

M.Sc. (Medical)
- Anatomy • Physiology • Biochemistry
- Pharmacology • Microbiology

DENTAL
- BDS • MDS (All Specializations) (Admissions through UP NEET Counselling)

NURSING
- ANM • GNM • PB B.Sc. Nursing
- B.Sc. Nursing
- M.Sc. Nursing (All Specializations)

PARAMEDICAL SCIENCES
APPROVED BY U.P. STATE MEDICAL FACULTY, LUCKNOW (EXCEPT FORENSIC SCIENCE)
- DXRT • BRIT • MRIT (For X-Ray/ CT Scan / MRI)
- DMLT • BMLT • MMLT (For Blood Testing Lab)
- D.Optom • B.Optom
- M.Optom (For Eye Testing Lab)
- B.Sc. & M.Sc. (Forensic Science)

JOB ORIENTED DIPLOMA PROGRAMMES -
- Blood Transfusion • C.T. Scan • O.T.
- Emergency & Trauma Care • M.R.I.
- Cardiology • Dialysis
- Anesthesia & Critical Care
- Orthopaedic & Plaster • Neonatal Care
- Audio & Speech Therapy
- Intervention Radiology

PHYSIOTHERAPY
- BPT
- MPT • Obs. & Gyn • Orthopaedics • Sports • Neurosciences • Cardiopulmonary • Paediatrics

PHARMACY
- Pharm.D. (Doctor of Pharmacy)
- Pharm.D. (Post Baccalaureate)
- D.Pharm. • B.Pharm.
- B.Pharm. (2nd Yr Lateral Entry)
- M.Pharm. (Pharmacology/Pharmaceutics) Pharmacognosy, Pharmaceutical Analysis)
Rs. 5000/- per month will be given as stipend

COMPUTING SCIENCES & IT
AICTE Approved
- B.Tech. Computer Science and Engineering
- B.Tech. (CSE) 2nd Year Lateral Entry
- B.Tech. (CSE) Specialization in Artificial Intelligence, Machine Learning & Deep Learning
- B.Tech. 2nd Year Lateral Entry (CSE) Specialization in Artificial Intelligence, Machine Learning & Deep Learning
- B.Tech. (CSE) in Data Science
- B.Tech. (CSE) in Cloud Technology & Information Security
- B.Tech. (CSE) in Cyber Security
- M.Tech. (CSE) in All Specializations
- B.Sc. Animation
- B.Sc. Computer Science
- B.Sc. (Hons. with Research)* - 4 yrs Computer Science

Collaboration with aivancity, France*
- M.Sc. • Artificial Intelligence • Data Science*

- BCA
- BCA -Cloud Technology & Information Security -Mobile Application & Web Technology
- BCA. (Hons. with Research)* - 4 yrs
- MCA in All Specializations

Collaboration with IBM
- B.Tech. (CSE) Application Development using Cloud and Analytics Platforms

Collaboration with TCS iON
- B.Tech. (CSE) in Data Science

FACULTY OF ENGINEERING
AICTE Approved
- B.Tech. • Computer Science & Engineering
- • Computer & Communication Engineering *
- • Electronics & Communication Engineering
- • Electrical Engineering • Mechanical Engineering
- • Civil Engineering
- B.Tech. 2nd year Lateral Entry (after Diploma/B.Sc.)

- M.Tech.
-Machine Learning & Data Sciences
-Electrical Power & Energy System *
-Additive Manufacturing*
-Structural and Construction Engineering*

Collaboration with TCS iON
- B.Tech. EC specialization in IoT
- B.Tech. ME specialization in Mechatronics

MANAGEMENT & COMMERCE
- BBA - HR, Finance, Marketing, IB
- BBA - Data Analytics
- BBA - International Business and Entrepreneurship
- BBA (Hons. with Research)* - 4 yrs
- B.Com. (Pass)
- B.Com. (Hons. with Research)* - 4 yrs
- MBA - Marketing, HR, IB, Finance, Agri. Business
- MBA - Industry Integrated with Global Exposure
- MBA - Hospital Management

Collaboration with WHIZHACK
- B.Com. - Fintech & Blockchain Technologies
- MBA - Cyber Security

LAW
5 Years Integrated Programmes
- BA-LL.B. (Hons.) • BBA-LL.B. (Hons.)
- B.Com.-LL.B. (Hons.) • LL.M.

PHYSICAL EDUCATION
- B.P.Ed. • M.P.Ed.
- B.P.E.S (Bachelor of Physical Education & Sports)
- B.P.E.S with Research

AGRICULTURE SCIENCES
ICAR ACCREDITED
- B.Sc. (Hons.) - Agriculture
- M.Sc. - • Agronomy • Soil Science • Plant Pathology

EDUCATION
- B.Sc.-B.Ed. (4 yrs.Integrated)
- B.A.-B.Ed. (4 yrs.Integrated)
- B.El.Ed.
- B.Ed. • M.Ed. • D.El.Ed. (BTC)

FINE ARTS
- BFA • MFA

SOCIAL SCIENCES & HUMANITIES
- B.A. (Hons. with Research)* - 4 yrs English, Economics, Psychology,
- BLIS • MLIS

Ph.D. in various disciplines
The University offers a research fellowship of Rs. 25,000 per month for all disciplines except Medical, where it is Rs. 30,000 per month.

RECOGNISED AS INDIA'S 4th TOP UNIVERSITY IN FILING THE MAXIMUM NO. OF PATENTS
DEPARTMENT FOR PROMOTION OF INDUSTRY AND INTERNAL TRADE MINISTRY OF COMMERCE & INDUSTRY GOVERNMENT OF INDIA

SECURED THE 19th SPOT AMONG INDIA'S TOP 40 PRIVATE UNIVERSITIES AS PER THE TIMES B-SCHOOL RANKINGS 2024

RANKED AMONG INDIA'S TOP 50 B-SCHOOLS AS PER THE TIMES B-SCHOOL RANKINGS 2024

Band 50-100 2023 Innovation
nirf NATIONAL INSTITUTIONAL RANKING FRAME WORK

GREEN RANKINGS-2024 DIAMOND BAND WITH GRADE A+
World Institutional RANKING

GRADE IN OUTCOME BASED EDUCATION (OBE) RANKINGS 2023 GOLD BAND WITH GRADE A
World Institutional RANKING

NURSING & PARAMEDICAL COLLEGE GRADE A BY QCI
QUALITY COUNCIL OF INDIA

* TERMS & CONDITIONS APPLY

For the complete list of programmes offered visit : www.tmu.ac.in

Admission Toll Free No. - 1800-270-1490 9258112544

Email : admission@tmu.ac.in, admissions@tmu.ac.in

Campus Admission Office : NH-09, DELHI ROAD, MORADABAD (U.P.)

Note :- In case of no response from any above mentioned numbers, please contact -7060508828, 9837848862

DISTANCE EDUCATION PROGRAMMES
Programmes Offered
- BBA • B.Com • M.Com • MA (Economics)

Website : www.cdoe.tmu.ac.in

Email : admission.cdoe@tmu.ac.in, Contact : 95209-42111, 95209-32111

TMU, PNB A/C # -3942002100004339 IFSC Code - PUNB0394200

Education Loan punjab national bank

विगत 9 सत्रों मे विश्वविद्यालय द्वारा अपने श्रोत से Rs. 65 करोड़ से अधिक की छात्रवृत्ति 3000 से अधिक जैन छात्र-छात्राओं को दी जा चुकी है।

जैन छात्र-छात्राओं के लिए कैम्पस में जैन जिनालय तथा छात्रावास में सूर्यास्त से पहले भोजन की व्यवस्था है।

हार्दिक शुभकामनाओं सहित...
SANTOSH JAIN & ASSOCIATES
SWATI VINIMAY & CONSULTANCY PVT. LTD
ANAMICA TRADERS PVT. LTD.
L. N. FINANCE PVT. LTD.
OFFICE
CITY TRADE CENTRE,
PNB Building, 4th Floor, A.T. Road, Guwahati-781001
M. : 94350-48488 (O) / 97060-48488 (R) / 8638773711

सी. ए. (डॉ.) संतोष काला | श्रीमती सरिता काला | संदीप-स्वाति पाटनी | श्रेयांस काला

RESIDENCE : 401/501, Abhinandan Appartment, 4th Floor, H.S.Road, Chhatribari, Guwahati-781008
E-mail : casantoshkala@gmail.com

SHREE COMPLEX & SHREEMAN COMPLEX, P. O. BIJOYNAGAR-781122, DIST-KAMRUP (ASSAM)

आचार्य विशुद्ध सागर जी होंगे विराग सागरजी के पट्टाचार्य

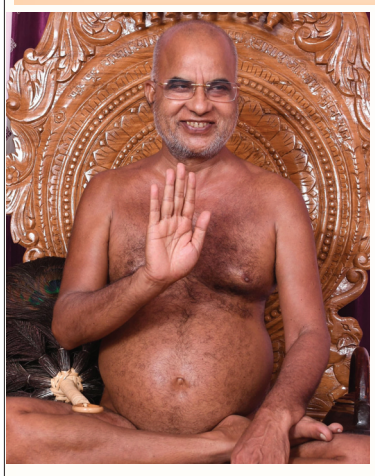

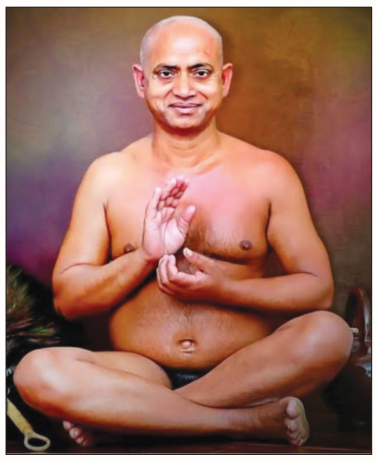

श्रमण संस्कृति के प्रमुख आचार्यों में से एक आचार्य विशुद्ध सागर जी महाराज समाधिस्थ आचार्य श्री विराग सागर जी महाराज के उत्तराधिकारी (पट्टाचार्य) होंगे, इस आशय की घोषणा आचार्य श्री विराग सागर जी महाराज ने जालना महाराष्ट्र में समाधि के पूर्व रिकार्ड कराये गये एक वीडियो सन्देश के माध्यम से की। इस सन्देश में आचार्य श्री ने संघस्थ साधुओं, आर्यिकाओं एवं श्रद्धालु भक्तों से स्वयं अपने मुखारविंद से कहते हुए कहा कि जीवन क्षण भंगुर है, पता नहीं किसके जीवन का समापन कब हो जाए। वर्तमान में अनेक योग्य शिष्य साधुओं का अपना संघ है और संघ के शिष्य देश भर में धर्म ध्वजा फहराते रहे हैं। चाहता हूं कि संघ के साधु भविष्य में भी बिना राग द्वेष के धर्म और श्रमण संस्कृति की ध्वजा इसी तरह फहराते रहें। पता नहीं हमें कल बोलने का मौका मिले ना मिले इसलिए मैं आज ही आगम की आज्ञा के अनुसार किसी योग्य साधु को अपना पद त्याग कर हल्का होना चाहता हूं। संघ में सभी साधु योग्य और श्रेष्ठ हैं उनमें से विशुद्ध सागरजी को मैं अपना पद त्याग कर उन्हें सौंपने की घोषणा करता हूं। वे योग्य एवं कुशल प्रज्ञावंत साधु हैं, मुझे विश्वास है कि वे संघ के सभी साधुओं का प्रेम वात्सल्य के साथ ध्यान रखते हुए संघ का संचालन करेंगे। अब आचार्य विशुद्ध सागर जी आचार्य विराग सागर जी के पट्टाचार्य शिष्य होंगे। अंत में आचार्य श्री ने सभी साधुओं, शिष्यों से साधु जीवन में हुई त्रुटियों के लिए सबसे क्षमा मांगते हुए कहा कि सबको क्षमा करता हूं, वे भी मुझे क्षमा करें। यही मेरा उपदेश और आशीर्वाद है।

आचार्य श्री विराग सागर जी द्वारा पद त्याग करने की घोषणा के संबंध में जानकारी मिलने पर आचार्य विशुद्ध सागर जी ने कहा कि मैं इस पद के योग्य तो नहीं हूं लेकिन गुरु आचार्यश्री ने मेरे ऊपर इतना विश्वास किया और मुझ जैसे भोंदू शिष्य को अपने मुख से अपना पद सौंपने की घोषणा की। आगम का उपदेश है कि भले ही प्राणों का वियोग भी हो जाए पर गुरु के वचनों, का, आदेश का उल्लंघन नहीं होना चाहिये अतः मैं गुरु आज्ञा को स्वीकार करता हूं।

प्रमाण सागर जी महाराज का चातुर्मास हेतु इंदौर में 14 जुलाई को होगा मंगल प्रवेश

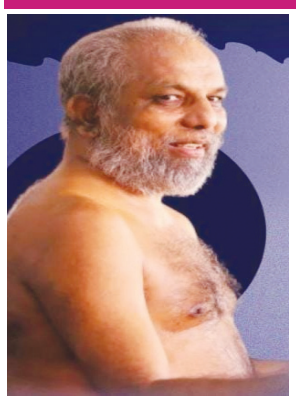

संत शिरोमणि आचार्य भगवन विद्यासागर जी एवं नवआचार्य 108 श्री समय सागर जी महाराज के मंगलमय आशीर्वाद से इस वर्ष 2024 का भव्य चातुर्मास गुणायतन प्रणेता, भावना योग, शंका समाधान प्रवर्तक 108 परम पूज्य मुनि श्री प्रमाण सागर जी संसघ का वर्षायोग कराने का परम सौभाग्य मां अहिल्या की नगरी इंदौर को प्राप्त हुआ है। गुरुदेव का मंगल विहार इंदौर महानगर के लिए चल रहा है और 14 जुलाई को उनका इन्दौर में भव्य मंगल प्रवेश होगा। पूज्य गुरुदेव के मंगल चातुर्मास कलश की स्थापना तारीख 21.07.2024 रविवार दोपहर 1.30 बजे से कार्यक्रम स्थल मोहता भवन, बास्केटबॉल ग्राउंड के पास, जंजीर वाला चैराहा, इंदौर पर होगी।

भोजशाला मामला जैन समाज की मांग की अलग से सुनवाई करेगा इन्दौर हाईकोर्ट

इंदौर हाईकोर्ट में भोजशाला से सम्बन्धित जैन समाज के मामले को हमारे वकीलों ने सुनवाई हेतु मेंशन किया था। विश्व जैन संगठन के प्रचारक राजेश जैन दद्दू एवं सलेकचद जैन ने बताया कि इंदौर हाईकोर्ट की माननीय खंडपीठ ने हमारी रिट को अलग से सुनने हेतु कहा है और कहा है कि यह फ्रैश रिट है, इसकी डीटेल में सुनवाई होगी। – राजेश जैन दद्दू

शेष पृष्ठ 1 का.....

आपके प्रमुख शिष्यों में आचार्य श्री विशुद्ध सागर जी, आचार्य विमद सागर जी, आचार्य विभव सागर जी, आचार्य श्री विनम्र सागर जी, आचार्य श्री विमर्श सागर जी आदि बनाए गए हैं। आपके द्वारा अनेक साहित्य का सृजन किया गया है अनेकों समाधियां कराई हैं। अनेक सिद्ध अतिशय क्षेत्रों मंदिरों, जिनालयों का मरम्मत नवीनीकरण प्रेरणा देकर कराया। आपने 44 वर्ष के संयमी जीवन में 44 वर्षायोग किए जिनमे सर्वाधिक भिंड में 7, श्रेयांस गिरी में 5, सिद्धक्षेत्र शिखर जी में 2, द्रोणगिरी में 1 अतिशय क्षेत्र में एक महानगरों ने 3 तथा जन्म भूमि में 2 वर्ष सन 2015, 2022 ने चातुर्मास किए। संयम काल में 3 करोड़ 80 लाख जप किए हैं। आपके पिता ने पहले क्षुल्लक फिर मुनि दीक्षा लेकर तथा जन्मदाता माता ने आर्यिका दीक्षा लेकर समाधिमरण किया। गृहस्थ अवस्था में 3 अनुज श्री विजय, श्री सुरेंद्र ओर ब्रह्मचारी नरेंद्र है तथा श्रीमती मीना और श्रीमती विमला बहनें हैं। श्री संजीव जैन भिंड से प्राप्त जानकारी अनुसार।

– राजेश पंचोलिया, इंदौर

सौरभ सागर वचन

जैन इतिहास और कथायें इस बात की साक्षी हैं कि अहिंसा की विजय हर युग में हुई है

-: नमनकर्ता :-

- राजूलाल जी बैनाडा, पचाला वाले जयपुर
- श्रीमती स्नेहलता सौगानी, जयपुर
- दिनेश चन्द कासलीवाल, जयपुर
- नीरज जैन, जयपुर
- श्रीमती रत्ना जैन(सुरजमल विहार, दिल्ली)
- श्रीमती ऊषा जैन, आगरा
- रमेश चन्द तिजारिया, जयपुर
- धर्मचंद पहाड़िया, जयपुर
- कुशल ठोल्या, जयपुर
- जौहरी बाजार दिगम्बर जैन महिला समिति
- प्रदीप जैन, मेरठ
- सारिका जैन, मेरठ

ज्ञानयोगी, संस्कार प्रणेता, जीवन आशा हॉस्पिटल प्रेरणास्रोत आचार्य सौरभ सागर जी जयपुर में विराजमान है।

संकलनः R. K. Advertising शेखर पाटनी, राष्ट्रीय संवाददाता जैन गजट
मो - 09667168267 email: rkpatni777@gmail.com

परम पूज्य वात्सल्य वारिधि, जिन धर्म प्रभावक, राष्ट्र गौरव आचार्य श्री 108 वर्धमान सागर जी महाराज एवं समस्त मुनि संघ के चरणों में

शत् शत् नमन, शत् शत् वंदन

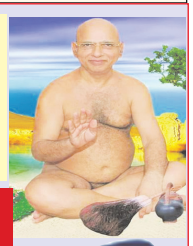

नमनकर्ताः राजेन्द्र कुमार जैन/भागचन्द्र जैन एवं समस्त छाबड़ा परिवार
'Manik Ratan Bldg', By lane Kamal Patrol Pump, H. B. Road, Machkhowa, Guwahati - 781009 Cell : 919435111035

Jain Group

डेह में आचार्य चैत्यसागर के सानिध्य में हुआ नवनिर्मित छतरियों का लोकार्पण

पवन पहाड़िया, डेह, नागौर

डेह, 1 जुलाई। जीव का सम्यकदृष्टि होना भी पुण्यवानी की बात है पर संस्कार देना तो माता-पिता के हाथ है। जिन परिवारों में धार्मिक कार्य होना, नित्य देव दर्शन करना, छोटे बड़ों के साथ कैसे व्यवहार करना आदि संस्कार बच्चों को दिए जाते हैं, उस घर की पीढ़ी कभी खोटी नहीं निकल सकती।

अच्छा गुरु मिल जाए तो लोहे को भी स्वर्ण कर सकता है। आज अपन यहां जिनकी समाधियों पर बनी छतरियों को प्रतिष्ठित करने के लिए इकठ्ठे हुए हैं यदि इनको भी कोई अच्छा गुरु नहीं मिलता तो इन्हें दुनियां किसलिए पूजती।

साधारण परिवार में जन्मी इन विभूतियों को आज सकल जैन समाज पूज रहा है, यह प्रबल पुण्यवानीं, परिवार से मिले अच्छे संस्कार व योग्य गुरु का ही तो प्रभाव है। दुनिया के करोड़ों जीव आते हैं जाते हैं, कौन किसको याद करता है पर कुछ जीव ऐसे होते हैं जिन्हें पीढ़ियां पूजती हैं। यह बात आचार्य चैत्यसागर जी ने डेह के पद्मप्रभु चैत्यालय के पास बनी मां इंदुमती, मां अमरमती तथा मां धरणीमती जी की समाधियों पर बनी छतरियों को पूजनीय बनाने के कार्यक्रम में कही। आचार्य श्री ने बताया कि डेह में जन्मे श्रेष्ठि श्री हरकचंद सेठी के सुपुत्र निर्मलकुमार सेठी ने व्यापार करने के साथ ही श्री भारतवर्षीय दिगम्बर जैन महासभा के अध्यक्ष पद को लगातार चालीस वर्षों तक सम्भालते हुए जैन धर्म के उन्नयन हित निस्वार्थ जो कार्य किया वो स्वर्ण अक्षरों में तो लिखा जाएगा ही पर उनके सुपुत्र श्री धर्मेन्द्र कुमार सेठी ने आज जो कार्य कर इन महान विभूतियों पर छतरियां व गार्डन निर्माण कर यह सिद्ध कर दिया है कि अपने पिता के नक्शेकदम में कहीं पीछे नहीं हैं।

वर्तमान में धर्मेन्द्र कुमार सेठी सम्पूर्ण उत्तर प्रदेश फ्लोर मिल्स एसोसिएशन के अध्यक्ष हैं, बहुत बड़ी जिम्मेदारी व बड़े बिजनसमैन होते हुए भी अपनी जन्म भूमि को तीर्थ का रूप देने के लिए इतनी चिंता करना व समय निकालना बहुत बड़ी बात है। ज्ञात रहे कि डेह के चम्पालाल सेठी की धर्मपत्नी बाल्यावस्था में ही वैध्यवता को प्राप्त हो गईं पर उन्होंने विधि के विधान को मान आचार्य गुरुवर के साथ दीक्षा लेकर जीवन बिताने के साथ इतनी ज्ञानवान बनीं कि विधवा मोहनी देवी जैन जगत की मां इंदुमती बन गईं तथा अपने सानिध्य में ही मेनसर में जन्मी बाल विधवा बेटी भँवरी को मांजकर मां सुपार्श्वमती बना दिया।

आज इंदुमती, अमरमती व धरणीमती माताजी की तीन छतरियों व गार्डन के निर्माण से डेह की भूमि को तीर्थ स्थान बनाने में जितना योगदान धर्मेन्द्रकुमार सेठी ने दिया उसकी उपस्थित श्रावकों ने भूरी-भूरी प्रशंसा की।

इस कार्यक्रम में जयपुर से वास्तुविज्ञ राजकुमार कोठारी, सुभाषचन्द पाटनी, नागौर, सुजानगढ़, ग्वालियर के अलावा डेह के सकल जैन अजैन श्रेष्ठी जन उपस्थित थे। कार्यक्रम का संचालन पण्डित जिनेश भैया ने किया।

अजमेर की पावन धरा पर होगा चातुर्मास

ललित पांड्या

परम पूज्य आचार्य श्री 108 सुनील सागर जी महाराज ने आज प्रातः अतिशय क्षेत्र मौजमाबाद में संघस्थ द्वय मुनिराज मुनि श्री 108 शुभम सागर जी एवं मुनि श्री 108 सक्षम सागर जी महाराज के अजमेर चातुर्मास 2024 हेतु मंगल आशीर्वाद दिया। इस अवसर पर श्री दिगम्बर जैन मुनि संघ सेवा समिति के अध्यक्ष सुशील जी बाकलीवाल, महामंत्री कोमल जी लुहाड़िया, सांस्कृतिक मंत्री ललित जी पाण्डया, महावीर जी अजमेरा, अशोक जी अजमेरा, विशाल जी लुहाड़िया, नरेन्द्र जी पाटनी, श्रीमती निर्मला जी पाण्डया, श्रीमति मैना जी बड़जात्या, श्रीमती कमला जी बाकलीवाल आदि मौजूद थे।

डेह में मनाया गया भ. विमलनाथ का मोक्ष कल्याणक

पवन पहाड़िया, डेह

डेह, 29 जून। डेह के अति प्राचीन श्री चन्द्रप्रभु जिनालय में आचार्य चैत्यसागर महाराज ससंघ के सानिध्य में सकल जैन समाज डेह ने भगवान के पंचामृत अभिषेक के साथ विमलनाथ भगवान का मोक्ष कल्याणक साढ़े बारह किलो का लड्डू चढ़ाकर मनाया गया। इस अवसर पर जैन समाज डेह के अलावा लाडनू, सुजानगढ़, नागौर, अहमदाबाद, बेंगलोर व जयपुर के जैन समाज के श्रावक भी उपस्थित रहे। भगवान के लड्डू चढ़ाने का लाभ श्री नेमीचंद पवनकुमार प्रवीणकुमार पहाड़िया को मिला। वहीं पंचामृत अभिषेक का लाभ विकास गंगवाल बेंगलौर को मिला। आचार्य चैत्यसागर जी ने सभी उपस्थित श्रावक श्राविकाओं को आशीर्वाद प्रदान करते हुए कहा कि जीव सम्यकदृष्टि हुए बिना किसी भी धार्मिक कार्यक्रम में भाग नहीं ले सकता है। बड़े पुण्य से ऐसे अवसर मनुष्य को प्राप्त होते हैं। पुण्यशाली जीव ही ऐसे सुअवसर प्राप्त करते हैं। द्रव्य का सदुपयोग भी पुण्योदय से होता है। कार्यक्रम का संचालन जयपुर से आये चिंकूजी पण्डित ने किया।

आचार्य विनीत सागर महाराज का आगामी चातुर्मास दिल्ली के नवीन शाहदरा में

रविन्द्र काला, संवाददाता

बून्दी, 2 जुलाई। आचार्य कल्याण सागर जी महाराज ग्वालियर वाले के पट्टाचार्य परम शिष्य बा. ब्र. विनीतधाम प्रणेता सिद्ध रत्नाकर आचार्य विनीत सागर जी महाराज का वर्ष 2024 का वर्षायोग चातुर्मास नई दिल्ली के नवीन शाहदरा में होगा। समाचार लिखने तक आचार्यश्री का मंगल विहार शाहदरा नई दिल्ली के लिए चल रहा है। अभी वर्तमान में सवाईमाधोपुर तक उनका विहार हो चुका है।

शान्ति विधान सम्पन्न करवाया गया

लक्ष्मी लाल चम्पालाल जैन बम्बोरिया

सराडी, 30 जून 2024। रविवार को 1008 श्री चन्द्रप्रभ दिगम्बर जैन मन्दिर में पंचम पट्टाधीश वात्सल्य वारिधि आचार्य वर्धमान सागरजी महाराज के सुयोग्य तपस्वी युगल मुनि 108 श्री अपूर्व सागरजी एवं मुनि 108 श्री अर्पित सागर जी महाराज, क्षुल्लक 105 श्री महोदय सागरजी महाराज एवं ब्रह्मचारी नमन भैया एवं सनावद (म.प्र.) निवासी क्षुल्लक महाराज जी के पिताजी ससंघ सानिध्य में प्रतिष्ठाचार्य पण्डित कमलेशजी सलुम्बर के मन्त्रोचार से शान्ति विधान सम्पन्न करवाया गया। शान्ति विधान में पूजा करने लिये सौधर्म, कुबेर, यज्ञनायक, ईशान आदि इन्द्र बनकर पूजा करने की बढ़चढ़ कर बोलियां लगाकर पात्र बने शान्ति विधान में मंडप पर 130 श्री फलों युक्त अर्घ्य समर्पित किये गये। शान्ति विधान की पूर्णाहुति से पूर्व मुनि महाराज अर्पित सागर जी महाराज ने अपने प्रवचन में कहा कि मन्दिर में आये विना गुरूओं की सेवा विना और शास्त्र श्रवण किये विना धर्म क्या है, धर्म कैसे करना, विना धर्म को जाने पशु-पक्षियों और इंसानों में क्या फर्क है, खाना, पीना, सोना, सुखी दुखी होना, भोग ऊपभोग रती सभी क्रीया एक ही तरह है, सिर्फ और सिर्फ धर्म ही है जो इंसान को पशुओं से अलग करता है। सभी धर्म में लगे धर्म को समझ कर आचरण में उतारें, धर्म समझने के लिये गुरूओं का सन्त समागम के बिना कौन समझाएगा, जब भी अवसर मिले देव शास्त्र, और गुरू की सेवा से नहीं चुके यही तीन रत्न (रत्नत्रय) संसार सागर से पार करने वाले हैं। पश्चात, युगल मुनिराज जी का पाद प्रक्षालन, (पावों को जल से पखारा) गया, युगल मुनिराज जी को शास्त्र भेंट किये गये, जिनेन्द्र प्रभु की आरती के बाद युगल मुनिराज की आरती की गई, आसपास के गांवों गींगला, खरका, औरवाडिया, ऊथरदा, मीथोडी आदि कई गावों से श्रावक श्राविकाओं ने आकर धर्म लाभ लिया एवं गुरू चरणों की धुली माथे से लगाई। मेच संचालन जिनेन्द्र जोलावत ने किया। शान्ति विधान के उपलक्ष्य में स्वामी वात्सल्य भोज का आयोजन भी किया। 3 जुलाई तक युगल मुनि संघ सहित सराडी में ही रूककर धर्म प्रभावना करने की संभावना है। ज्ञातव्य है कि परम ज्ञानी युगल मुनिराज का चातुर्मास सलुम्बर में होना निश्चित हो चुका है।

आचार्य भद्रबाहू सागर जी महाराज की अनमोल वाणी

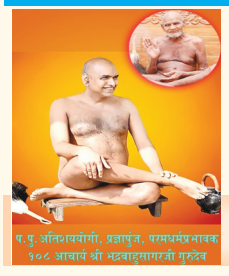

परम पूज्य 108 प्रज्ञापुंज धर्म प्रभावक अतिशय योगी आचार्य श्री भद्रबाहूसागरजी महाराज

उस ओर कभी मत जाओ, जिस ओर तुम्हारे चारित्र में पतन होने का खतरा हो

-: नमनकर्ता :-

दीपचन्द गंगवाल, बाराबंकी
श्रीमती नीता जैन, बाराबंकी
श्रीमती अनिता जैन, बाराबंकी
श्रीमती आशु जैन, बाराबंकी
मुदित जैन, प्रयागराज
दिलीप जैन, प्रयागराज ...

महेश जैन, बोदेगांव (महा.)
राकेश जैन, परभनी (महा.)
तुषार मनोज कुमार चौबाकर, परभनी महा.
प्रकाशचन्द्र साउजी, अम्बड़ (महा.)
दिलीप दोषी, मुम्बई (महा.)
सुनिल हीराचन्द दोषी, अकलूज (महा.)

परमपूज्य 108 प्रज्ञापुंज धर्म प्रभावक अतिशययोगी आचार्य श्री भद्रबाहूसागरजी महाराज जी के चरणों में शत शत वन्दन

संकलन: R. K. Advertising शेखर पाटनी, राष्ट्रीय संवाददाता जैन गजट
मो - 09667168267 email: rkpatni777@gmail.com

मुनि तरुण सागर का श्मशान में मनाया 57 वां जन्म दिवस

सीकर, 26 जून 2024। कड़वे प्रवचनों के लिए मशहूर राष्ट्र संत तरुण सागर महाराज का 57 वां जन्मदिन बुधवार को सीकर स्थित मोचीवाड़ा, श्मशान घाट में मनाया। इस दौरान संतोष विनायक्या, सुमित प्रकाश मोदी, अनिल दीवान, कमल संगही, जुगल काला, विनीत पहाड़िया, प्रियंक गंगवाल, नवरत्न छाबड़ा आदि उपस्थित थे।

जन्म, तप और मोक्ष कल्याणक महोत्सव मनाया

राजाबाबू गोधा, संवाददाता

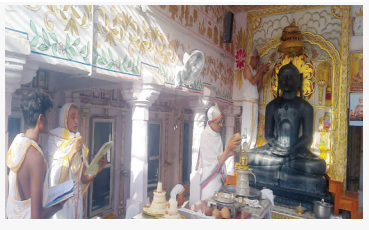

राजस्थान में बांसवाड़ा जिले के नौगामा में भगवान शांतिनाथ का जन्म, तप और मोक्ष कल्याण बड़े हर्षोल्लास के साथ मनाया। भगवान आदिनाथ दिगंबर जैन मंदिर, 1008 भगवान महावीर समवशरण मंदिर, सुखोदय तीर्थ नसिया जी में विशेष शांतिधारा अभिषेक बड़े भक्तिभाव पूर्वक किए गए। अभिषेक शांतिधारा करने का प्रथम सौभाग्य गांधी, दीपेश दिनेश चंद्र, दोसी विनोद अमृतलाल, पिंडारमिया हितार्थ प्रकाश चंद्र को प्राप्त हुआ। इस अवसर पर महिला मंडल द्वारा एवं हेमलता पंचोली, सुषमा पंचोली द्वारा लाडू बनाया गया। लाडू को बड़े भक्ति भाव से नाचते हुए वाद्य यंत्रों के मधुर स्वर लहरों के साथ पंचोरी संजय सुषमा पंचोरी, जतिन, निमित्त, सुभाष चंद्र दोसी, आशा जयंतीलाल को चढ़ाने का सौभाग्य प्राप्त हुआ। इस अवसर पर विधानाचार्य रमेश चंद्र गांधी व वीना दीदी के सानिध्य में भगवान शांतिनाथ की पूजन बड़े भक्ति भाव से की गई।

आचार्य श्री विराग सागर जी महाराज की समाधी पर किशनगढ़ में हुई विनयांजलि सभा

कई वक्ताओं ने व्यक्त किये अपने विचार

मदनगंज-किशनगढ़, 5 जुलाई। जैन गजट के राष्ट्रीय संवाददाता शेखरचन्द पाटनी किशनगढ़ जैन समाज को सम्बोधित करते हुए कहा कि आचार्य विराग सागर महाराज मेरे गुरू थे और आज मै अनाथ हो गया हूँ। अगर इस पृथ्वी के सारे समुन्द्रों की स्याही बना ली जाये व पृथ्वी के सारे वृक्षों की कलम बना ली जाय तो भी उपसर्ग विजेता आचार्य विराग सागर जी महाराज के गुणानुवाद पूरे नहीं होंगे। उपसर्ग विजेता गुरूवर से यह प्रथम सरग हमने सीखा- समता सन्तों का जीवन है इसका प्रयोग आचार्य विराग सागर जी में देखा। जब कांप उठा था जग सारा, आप ध्यान में निश्चल थे, तब मिला साधुता का परिचय, सब उपसर्गों के आप अविचल है। आचार्य 108 श्री विराग सागर जी महाराज की विनयाजंलि सभा जैन भवन में आयोजित हुई, जिसका मंच संचालन परम मुनिभक्त, दानवीर श्रेष्ठी, सरल स्वभावी श्री कमल कुमार जी वेद ने राष्ट्रीय संवाददाता शेखरचन्द पाटनी के बारे जानकारी दी तथा कहा कि हमारा किशनगढ़ का सौभाग्य है कि किशनगढ़ के जैन गजट के राष्ट्रीय संवाददाता श्री शेखर चन्द पाटनी आज से करीब पांच वर्ष पूर्व दिल्ली के लाल किले के प्राचीर में जब 24 दीक्षायें हुई थीं तब शेखर चन्द पाटनी को विद्वत सम्मान से आचार्य विराग सागर जी महाराज के द्वारा सम्मानित किया गया था नगद पुरस्कार के साथ। समाज के द्वारा माला, कण्ठा, तिलक, अभिनन्दन पत्र के साथ आचार्य विराग सागर जी महाराज ने कहा था कि शेखर चन्द पाटनी पूरे भारत में ऐसे व्यक्तित्व के धनी है, सरल स्वभावी निर्ग्रन्थ सन्तों के प्रति जो वो गुणानुवाद करते है, पत्र-पत्रिकाओं के माध्यम से जो गुणानुवाद करते है, वैयावृत्ति करते हैं, पद विहार में जो साथ चलते है वही सच्ची गुरू सेवा है।

यह प्रोग्राम आचार्य सुनील सागर जी महाराज के ससंघ सान्निध्य में हुआ। संघस्थ 105 आर्यिका सूत्रमति माताजी व 105 क्षुल्लक श्री विजयन्त सागर जी महाराज ने भी अपने विचार व्यक्त किये। कमल कुमार जी ने कहा कि आचार्य विराग सागर जी महाराज विशाल संघ के उन्नायक थे। मदनगंज-किशनगढ़ में आचार्य श्री के सान्निध्य में 11 दीक्षायें हुई थीं, जिनमें एक मुनि विश्वनाथ सागर जी महाराज किशनगढ़ के ही थे। किशनगढ़ में कई वक्ताओं ने अपने-अपने विचार व्यक्त किये जिसमें प्रमुख विनोद जी पाटनी, प्रकाशचन्द जी गंगवाल, कमल कुमार जी वैद, नवरत्न देवी दगड़ा, शान्तिलाल झांझरी आदि वक्ताओं ने आचार्य श्री के कृतित्व व व्यक्तित्व पर प्रकाश डाला।

- शेखरचन्द पाटनी, राष्ट्रीय संवाददाता

गौरवशाली जैन बच्चों को सम्मान

गोहाटी, 27 जून। यह दिन श्री भारतवर्षीय दिगम्बर जैन महिला महासभा के लिए बहुत ही गौरव का दिन था, इस दिन गोहाटी महिला महासभा की अध्यक्षा श्रीमती बीना छाबड़ा एवं उनकी पूरी टीम ने उन गौरवशाली जैन बच्चों को सम्मानित किया जिन्होंने 10 जी तथा 12जी में 90 प्रतिशत से ज्यादा अंक अर्जित किए। इस अवसर पर श्री भारतवर्षीय दिगम्बर जैन महिला महासभा की राष्ट्रीय उपाध्यक्षा श्रीमति शिखा छाबड़ा, राष्ट्रीय महामंत्री, श्रीमति ज्योत्सना जैन, राष्ट्रीय प्रचार प्रसार मंत्री श्रीमती रजनी जैन की गौरवमय उपस्थिति थी। श्रीमती शिखा जी छाबड़ा, ज्योत्सना जी जैन तथा रजनी जी जैन का मार्गदर्शन था (आप सेंट्रल से पधारे हैं)। इस अवसर पर हमारी गौरवशाली अध्यक्षा श्रीमती बीना छाबड़ा, महासभा की उपाध्यक्षा श्रीमती सरिता सेठी, कोषाध्यक्ष श्रीमती सुनीता बागड़ा, प्रचार प्रसार मंत्री श्रीमती ममता काला तथा पूरी टीम एवं समाज के विशिष्ठ एवं गणमान्य व्यक्तियों की उपस्थिति समारोह में चार चांद लगा रही थी।

इस सम्मान समारोह में विशेष उपस्थिति रही श्री महावीर जी छाबड़ा, श्री महावीर जी पाटनी, श्री आलोक जी छाबड़ा, श्री अशोक जी सेठी, श्री अजीत जी छाबड़ा, श्री किशोर कुमार जी काला, श्री अशोक जी छाबड़ा, श्री रामचंद्र जी सेठी, श्री छोटू जी पाटनी, श्री प्रवीण जी सबलावत, श्री अजीत जी छाबड़ा तथा अन्य गणमान्य व्यक्तियों की।

श्रीमती बीना छाबड़ा ने अपनी मनमोहक आवाज एवं मुस्कान के साथ तहे दिल से सबका स्वागत किया। बीना जी छाबड़ा एवं सरिता जी सेठी द्वारा मंगलाचरण का शुभारंभ किया गया। कार्यक्रम को सफल बनाने में विशेष योगदान रहा संगीता जी बड़जात्या, मोनिका जी बाकलीवाल, शांति देवी काशलीवाल, निधि बाकलीवाल, बंटी पाटनी तथा अन्य सभी साथीगण।

कार्यक्रम की शरूआत श्रीमान संतोष कुमार जी मंजू देवी छाबड़ा, सुपुत्र श्री आलोक कुमार, श्रीमती रेखा देवी छाबड़ा ने दीप प्रज्वलित करके किया। कुमारी चंचल जैन ने स्वागत नृत्य कर के सभी का मन मोह लिया। डा. ज्योत्सना जैन ने तथा श्रीमान किशोर जी काला ने बच्चों को अपने अनुभव शेयर किए। अशोक जी सेठी ने अपना योगदान देकर अपनी सेवा प्रदान की। कार्यक्रम का संचालन श्रीमती मेघा छाबड़ा ने किया।

- शिखा छाबड़ा (राष्ट्रीय उपाध्यक्षा), बीना छाबड़ा (गोहाटी शाखा अध्यक्षा)

कोलकाता जैन समाज और तेघड़िया समाज ने दी विनयांजलि

महावीर जी तेघड़िया, कोलकाता

कोलकाता। आचार्य विराग सागर की समाधि जालना से एक किलोमीटर दूर स्थित पाटनी फार्म परिसर देवमूर्ति ग्राम में हुई। आचार्य विद्या सागरजी के बाद 4 जुलाई को आचार्य विराग सागर की समाधि से जैन समाज को बड़ी क्षति हुई है। कोलकाता में श्री विराग सागर जी महा मुनिराज को श्री सुमतिनाथ दिगंबर जिन चैत्यालय तेघारिया में एवं वीआईपी रोड, जैन समाज के द्वारा भावपूर्ण एवं अश्रुपूर्ण श्रद्धांजलि दी गई। जैन समाज के महावीर जैन ने जैन गजट को बताया कि जैन समाज ने 1 मिनट का मौन धारण रख उन्हें भावभीनी श्रद्धांजलि दी। आचार्यश्री ने 300 से अधिक मुनि, आर्यिका को दीक्षित किया है, वे आजीवन बाल ब्रह्मचारी रहे। भारतवर्ष की पावन भूमि सदैव नर रत्नों की जन्म दात्री रही है जहाँ पर तीर्थंकरों, यतिवरों तथा महापुरुषों ने जन्म लेकर पुरुषार्थ द्वारा, त्याग, तपस्या के माध्यम से अपना आत्म कल्याण किया, इस श्रृंखला में आचार्य श्री विराग सागर जी ने जन्म लेकर इस वसुंधरा को गौरवान्वित किया।

ॐ महावीराय नमः
जैन मंदिरों के आइटमों के लिए जयपुर का सबसे पुराना प्रतिष्ठान
नारायण सोयल मांगीलाल सोयल
ए-27/28 श्याम पूरी, हीदा की मोरी, जयपुर, (राज.) 302003
चातुर्मास के पावन अवसर पर हमारे यहां
महाराज श्री के पीछी मोरपंख, बेत,
जूट की डोरी, चटाई उपलब्ध हैं।

फोन नं. 9660882020, 6376220017

चन्द्रगिरि में मंगल प्रवेश

डोंगरगढ़, 02.07.2024। संत शिरोमणि आचार्य श्री 108 विद्यासागरजी महाराज के परम प्रभावक शिष्य आचार्य श्री 108 समयसागरजी महाराज के मंगल आशीर्वाद से मुनिवरश्री 108 आगमसागरजी महाराज, मुनिवरश्री 108 पुनीतसागरजी महाराज, ऐलकश्री 105 धैर्यसागरजी महाराज का भव्य मंगल प्रवेश सायंकाल में श्री चंद्रगिरी तीर्थक्षेत्र (आचार्य श्री के समाधि स्थल) डोंगरगढ़ में हुआ।

- यश जैन, राजनांदगांव

ब्रह्मचारी अतुल भैया का स्वागत

महावीर जैन तेधड़िया, कोलकाता

कोलकाता, 2 जुलाई। सुमतिनाथ जिन चैत्यालय, तेघाड़िया में ब्रह्मचारी अतुल भैया का स्थानीय समाज द्वारा जोरदार स्वागत किया गया। प्रतिष्ठाचार्य पंडित श्री राजकुमार जी जैन शास्त्री, महावीर जैन, मनीष जैन, अशोक जैन, दिनेश जैन, पारस जैन एवं राजकुमारी जैन, ऊषा जैन, हेमा जैन, पम्मी जैन, बीना जैन, अनिता जैन, कांता जैन, सरिता जैन एवं समस्त तेघारिया समाज के द्वारा श्री सुमतिनाथ दिगम्बर जिन चैत्यालय जी में ब. अतुल भैय्या जी का स्वागत बहुत ही शानदार तरीके से किया गया है उसके लिए आप सभी को बहुत-बहुत अनुमोदना। महावीर जैन ने जैन गजट को बताया कि प्रोग्राम बहुत सुंदर तरीके से संपन्न हुआ।

णमोकार पाठ

डा. आर. के. जैन

यमुनानगर, 2 जुलाई। जैन मिलन यमुनानगर-जगाधरी द्वारा भगवान महावीर स्वामी के 2550 वें निर्वाण कल्याणक वर्ष के उपलक्ष में णमोकार महामंत्र की श्रृंखला का आठवां पाठ न्यू जैन नगर निवासी बिजेन्द्र जैन परिवार के सौजन्य से किया गया। कार्यक्रम की अध्यक्षता मिलन उपाध्यक्ष वीर राकेश जैन ने की तथा संचालन कार्यक्रम महामंत्री वीर देवेन्द्र जैन ने किया।

राजकीय अतिथि आचार्य श्री प्रमुख सागर जी महाराज के अनमोल सूत्र

उस ओर कभी मत जाओ, जिस ओर तुम्हारे चारित्र में पतन होने का खतरा हो
प्रभावना दिवाकर, श्रमण धर्म प्रभाकर, करूणा सागर, अहिंसा तीर्थ-प्रणेता, राष्ट्रसन्त, पंजाब श्रावक उद्धारक, सरलमना, ग्राम मन्दिर उद्धारक, इटावा गौरव, संस्कार प्रणेता, गुण-गौरव शिरोमणि, पुरूषार्थ के पुरूषोत्तम, श्रमण-गौरव, राजकीय अतिथि, राष्ट्रसन्त, बालयोगी के चरणों में शत-शत नमन
शत् शत् नमन वंदन
-: नमनकर्ता :-
श्रीमती प्रभा सेठी, गुवाहाटी
श्रीमती रिंकी सेठी, विजयनगर
श्रीमती सोनल पाटनी, कोलकाता
श्रीमती शिम्पल सेठी, आठगांव, गुवाहाटी
श्रीमती चन्द्रा बड़जात्या, गुवाहाटी
श्रीमती रूपा रारा, गुवाहाटी
सुभाष चूड़ीवाल, दिसपुर, गुवाहाटी
राजकुमार टोंग्या, रेहाबाड़ी, गुवाहाटी
विनोद कुमार गंगवाल, छत्रीबाड़ी, गुवाहाटी
पूर्वोत्तर प्रदेशीय दिगम्बर जैन महिला संगठन, गुवाहाटी
श्रीमती हेमा पाटनी, पान बाजार, गुवाहाटी
श्रीमती कुसुम बड़जात्या, गुवाहाटी
राजकीय अतिथि आचार्य श्री प्रमुख सागर जी महाराज दिसपुर में विराजमान हैं।
संकलन: R. K. Advertising शेखर पाटनी, राष्ट्रीय संवाददाता जैन गजट
मो - 09667168267 email: rkpatni777@gmail.com

गणाचार्य श्री विरागसागर जी महाराज का जाना श्रमण संस्कृति एवं जैन समाज के लिए बहुत बड़ी क्षति

सम्पादकीय
भावपूर्ण श्रद्धांजलि

परम पूज्य गणाचार्य विरागसागर महाराज की संलेखना समाधि बुध-गुरुवार की मध्यरात्रि 2.30 बजे महाराष्ट्र के जालना में हो गई। रात से ही यह खबर जैसे ही सोशल मीडिया के माध्यम से आई लोग स्तब्ध रह गए। किसी को भी गुरुवर की समाधि की खबर एक सपना जैसे महसूस हुई, लेकिन सच्चाई यही थी। जिसने भी सुना स्तब्ध रह गया, इस खबर के साथ समूचे देशभर की जैन समाज में शोक की लहर व्याप्त हो गई। हालांकि साधु के लिए समाधि उत्सव का दिन होता है।

भारतीय वसुन्धरा को इस बात का महान गौरव है कि इसने अनेक महान नर रत्नों को जन्म दिया। रत्न की कीमत फिर भी आंकी जा सकती है किन्तु धर्मात्मा नर रत्नों की कीमत नहीं आंकी जा सकती, क्योंकि उनका कोई मूल्य नहीं होता, वे अमूल्य होते हैं। ऐसे ही अमूल्य रत्न, वात्सल्य के धनी, प्रशांतमूर्ति आचार्य श्री विरागसागरजी महाराज थे। आपके दिव्य व्यक्तित्व का प्रभाव आपके द्वारा दीक्षित साधु वर्ग में स्पष्ट रूप से परिलक्षित होता है। आचार्यश्री के निर्देशन, प्रेरणा एवं सान्निध्य में जैन समाज को अनेक महान उपलब्धियां हासिल हुई हैं। समाजोत्थान हेतु आपका अविस्मरणीय योगदान है। आचार्यश्री ने अपने अंदर कभी अभिमान नहीं पनपने दिया, हमने जब भी देखा है तो प्रसन्नता ही देखने को मिली। वे वात्सल्य के धनी थे, साधुओं पर उनका अतीव वात्सल्य झलकता था। विद्वानों के प्रति भी उनका असीम वात्सल्य देखने को मिलता था।

यति सम्मेलन-युग प्रतिक्रमण की प्राचीन परंपरा को पुनर्जीवित कियाः जैन शासन में युग प्रतिक्रमण यति सम्मेलन की पुरातन परम्परा है। अर्हद्बलि आचार्य भगवन ने यति सम्मेलन युग प्रतिक्रमण किया था। पांच वर्ष का एक युग माना गया है, इसलिए इसे युग सम्मेलन भी कहते हैं। इस सम्मेलन में सौ योजन (लगभग 1200 किलोमीटर) दूर तक के साधु इसमें सम्मिलित होते थे। उस काल में हुए यति सम्मेलन में जिनशासन की प्रभावना के निमित्त मुनिराजों के द्वारा अनेक निर्णय लिये गये थे। आचार्य श्री विराग सागर जी महाराज ने यति सम्मेलन व युग प्रतिक्रमण की एक अति प्राचीन जैन परम्परा को पुनर्जीवित करने का स्तुत्य प्रयास किया। इसको व्यवस्थित रूप से सन 2012 में जयपुर से शुरु किया और इसके बाद निरंतर श्रृंखला चलती रही है। 2017 में अतिशय क्षेत्र करगुवां जी-झांसी में आयोजित यति सम्मेलन व युग प्रतिक्रमण कार्यक्रम में आयोजित विद्वत संगोष्ठी में सम्मिलित होने का अवसर प्राप्त हुआ था। उसी परम्परा को जीवंत रखते हुए जन्म भूमि पथरिया (दमोह) में फरवरी 2023 में बहुत महत्त्वपूर्ण आयोजन हुआ था जिसमें विविध आयोजन हुए साथ ही साथ में साधु संघ का विशाल संघ भी इसमें जुटा और विविध चर्चा-परिचर्चा, संवाद-विमर्श हमें देखने को मिलें।

साहित्य साधनाः पूज्य गणाचार्यश्री द्वारा चेतन कृतियों के साथ अनेक ग्रंथों, टीकाओं को लिखकर श्रुत संवर्धन किया है। आचार्य विरागसागर ने 6 से अधिक साहित्य पर शोध किया था। शोध में वारसाणुपेक्खा पर 1100 पृष्ठीय सर्वोदयी संस्कृत टीका, रयणसार पर 800 पृष्ठीय रत्नत्रयवर्धिनी संस्कृत टीका, लिंग पाहुड़ पर श्रमण प्रबोधनी टीका, शील पाहुड़ पर श्रमण संबोधनी टीका, शास्त्र सार समुच्चय पर चूर्णी सूत्र और अनेक शोधात्मक, शुद्धोपयोग, सम्यकदर्शन, आगमचक्खूसाहू आदि, चिन्तनीय बालकोपयोगी कथा अनुवाद गद्य संपादित साहित्य, जीवनी व प्रवचन साहित्य 150 से अधिक पुस्तकों का लेखन किया। गणाचार्य श्री विरागसागरजी महाराज के शिष्यों ने साहित्य सृजन के क्षेत्र में विशेष क्रांति लायी है।

अद्भुत संयोगः दक्षिण में जन्मे संत आचार्य श्री विद्यासागर जी की समाधि उत्तर में हुई और उत्तर में जन्मे गणाचार्य श्री विरागसागर जी की समाधि दक्षिण में हुई। दोनों महान आत्माओं की समाधि का समय भी लगभग एक समान है। एक अष्टमी पर्व पर तो दूसरे चतुर्दशी पर्व पर समाधि को प्राप्त हुए। गणाचार्य श्री विराग सागर जी का जन्म गुरुवार को हुआ था और समाधि भी गुरुवार को हुई, यह अपने आप में स्मरणीय तथ्य है।

एक के बाद एक श्रमण सूर्य का अवसान बहुत बड़ी क्षतिः 2024 में जैन श्रमण संस्कृति के दो बड़े संघों के नायक (आचार्यों) की समाधि होने से सकल जैन समाज स्तब्ध है। फरवरी में संत शिरोमणि आचार्य श्री विद्यासागर जी के बाद अब दूसरे बड़े संघ के आचार्य विरागसागर जी की समाधि हुई है। इसके पूर्व में हाल ही के वर्षों में आचार्य श्री विद्यानंद जी महाराज, सराकोद्धारक आचार्य श्री ज्ञान सागर जी महाराज, आचार्य श्री सन्मति सागर जी महाराज, मुनि श्री तरुणसागर जी महाराज, आचार्य श्री निर्मल सागर जी महाराज आदि जैसे प्रभावक दिगम्बर संतों की समाधि ने बहुत बड़ा शून्य पैदा कर दिया है जिसकी भरपाई असंभव दिख रही है। एक के बाद एक बड़े बड़े संतों की समाधि से श्रमण संस्कृति, जैन समाज को गहरा आघात पहुँचा है।

प्रभावनामयी अनेक आयोजनों के प्रेरणास्त्रोतः 29 की उम्र में ही आचार्य पद की जिम्मेदारी मिलने के बाद गणाचार्य विरागसागर जी मुनिराज ने जैन संस्कृति की धर्म प्रभावना को ऐसा बढ़ाया कि हर युवा उनसे प्रभावित होने लगा। न सिर्फ बुंदलेखंड, म. प्र. बल्कि उ. प्र., बिहार, झारखंड, छत्तीसगढ़, महाराष्ट्र सहित अन्य प्रांतों में विहार करते हुए धर्म पताका फहराया।

उनके सान्निध्य में अनेक पंचकल्याणक प्रतिष्ठा सम्पन्न हुई। शाकाहार और व्यसन मुक्त जीवन के लिए उनकी प्रेरणा से अनेक आयोजन हुए जिससे लाखों लोग प्रभावित हुए, उन्हें नया जीवन मिला। सम्यकज्ञान शिविर, पूजन प्रशिक्षण शिविर, श्रावक संस्कार शिविरों से युवा वर्ग में एक अनोखी जागृति देखने को मिली।

पांच सौ से अधिक शिष्य - प्रशिष्यः प्राप्त जानकारी के अनुसार आचार्य विरागसागर ने संघ में 94 मुनियों, 73 आर्यिकाओं, 5 ऐलक, 23 क्षुल्लक, 32 क्षुल्लिका दीक्षाएं देकर चेतन कृतियों का निर्माण कर मोक्षमार्ग की ओर प्रशस्त किया। इस तरह करीब 222 साधु, साध्वियां विराग सागर के बड़े संघ में हैं। 9 आचार्य बनाए। उनके शिष्य प्रशिष्य को मिलाकर पांच सौ से अधिक यह संख्या पहुँच जाती है जो श्रमण संस्कृति को गौरवमयी है। इसके अलावा 133 से अधिक संल्लेखना करा एक महनीय कार्य संपादित किया।

संघ को समय पर किया व्यवस्थितः समाधि के परम पूज्य निर्यापक मुनि श्री सुधा सागर जी महाराज ने अपनी विनयांजलि में कहा कि उनका संघ अनाथ नहीं हुआ है, वे समय-समय पर अपने शिष्यों को अधिकार देते गए और संघ को व्यवस्थित करते गए। शायद उन्हें पहले से महसूस हो गया था कि वे जल्दी चले जायेंगे। श्रमण संस्कृति की बहुत बड़ी कतार उनके निमित्त से मिली।

मजबूत हाथों में पट्टाचार्य पद, गणाचार्य श्री विराग सागर जी को शायद पहले से महसूस हो गया था कि अब उनकी देह ज्यादा समय इस धरती पर रहने वाली नहीं है इसलिए उन्होंने समय रहते समाधि के एक दिन पूर्व ही अपने अंतिम संबोधन में पट्टाचार्य का पद अपने सुयोग्य शिष्य योग्य प्रभावक संत चर्या शिरोमणि आचार्य श्री विशुद्ध सागर जी महाराज को देने की घोषणा कर आगम की परंपरा का पालन किया। निश्चित ही पूज्य आचार्य विशुद्ध सागर जी महाराज को यह पद दायित्व सौंपकर अपनी विरासत को मजबूत हाथों में प्रदान किया है। पूज्य गुरुदेव का संपूर्ण जीवन 'स्व' और 'पर कल्याण' के लिए समर्पित रहा। वे अध्यात्म के सूर्य थे। मुझे भी अनेक बार उनके दिव्य सानिध्य का सौभाग्य प्राप्त हुआ। जहाँ विद्वत संगोष्ठियों में सहभागिता की वहीं प्रतिभा सम्मान और पत्रकार सम्मेलन जैसे आयोजनों में उनके सान्निध्य में योगदान देने का सौभाग्य प्राप्त हुआ। अनेक बार निकटता से चर्चा और आशीर्वाद प्राप्त करने का सौभाग्य प्राप्त हुआ। आज भौतिक रूप से भले ही वह हमारे बीच नहीं है, किंतु उनकी शिक्षाएं, विचार, व्यवहार और उनका व्यक्तित्व हमें सदैव सन्मार्ग की दिशा दिखाता रहेगा।

परम पूज्य जैन दिगम्बर आचार्य श्री विराग सागर जी महाराज के विचार प्रकाश स्तंभ बनकर सदैव हमारा मार्गदर्शन करते रहेंगे।

समाधी नमन !

साधना की जगमगाती देहरी से,
एक दीपक फिर किनारा कर गया।
मंजिलों की दूरियां पूछें कहाँ से,
मील का पत्थर किनारा कर गया।।

हम सबका परम दायित्व और कर्तव्य है कि हम उनके बताए मार्ग पर चलें तभी सच्ची विनयांजलि होगी।

जैन गजट, महासभा परिवार की ओर से उन महामना के चरणों मे कोटिशः नमोस्तु, सादर विनयांजलि समर्पित। 'गुरुवः पांतु नो नित्यं, ज्ञान- दर्शन नायकाः। चारित्रार्णव गंभीरा मोक्ष मार्गोपदेशकाः।।''

- डॉ. सुनील जैन 'संचय'
सह सम्पादक

मायके के संस्कार और ससुराल के त्याग वैराग्य के वातावरण से दीक्षा के भाव परिणाम हुएः कहा दीक्षार्थी ब्र. मधुबाला पंचोलिया ने

सनावद। जीवन के किसी भी पल में वैराग्य उपज सकता है संसार में रहकर प्राणी संसार को तज सकता है। बिरला प्राणी ही वैराग्य के इन पलों को अपने जीवन में सुनकर ग्रहण कर आत्मसात करते हैं। पंचम पट्टाधीश वात्सल्य वारिधी आचार्य श्री वर्धमान सागर जी महाराज सहित 17 साधु परमेष्ठी की जन्म, कर्म, समाधि, दीक्षा धर्म पुण्य भूमि गुलशनावाद सनावद में दीक्षार्थी ब्रह्मचारिणी मधुबाला पंचोलिया जैन का अभिनंदन शोभा यात्रा समारोह नगर के प्रमुख मार्गो से निकाली गई।

सनावद, खंडवा, बुरहानपुर, बेड़ियां, बड़वाह, महेश्वर, मंडलेश्वर, इंदौर, धामनोद, भीकनगांव, खरगौन, ऊन, बड़वानी आदि अनेक नगरों से परिजन, समाजजन, धर्मावलंबी पधारे आर्यिका श्री सरस्वती माताजी ने आचार्य श्री वर्धमान सागर जी सहित 17 साधुओं का स्मरण कर सनावद को पुण्यशाली नगरी बताया। आपने बताया कि हम सनावद अनेक बार आए है तथा आचार्य श्री के साथ 5 से अधिक चातुर्मास हुए हैं। संयम त्याग के संकल्प से पुण्य की वृद्धि और प्राण की रक्षा भी होती है। आपने

बताया कि नगर सनावद की बेटी ब्रह्मचारिणी सिद्धा दीदी की दीक्षा के समय उनके चाचा अजय जी ने 12 वर्षों में दीक्षा का संकल्प किया। कुछ माह पूर्व उनके साथ भीषण अग्नि दुर्घटना में दोनों पैर बुरी तरह झुलस गए। वर्ष 2018 दीक्षा के समय के संकल्प के अर्जित पुण्य ने प्राणों की रक्षा की। दीक्षा की अनुमोदना केवल गोद भरने उपस्थिति से नहीं होती वास्तविक अनुमोदना अपनी बुराईयों के त्याग, छोटे छोटे नियम लेकर आज के दिवस को यादगार बनाने से होती है।

दीक्षार्थी ब्रह्मचारिणी प्रतिमा व्रतधारी मधुबाला पंचोलिया ने बताया कि बचपन से माता पिता से धर्म के संस्कार मिले। विवाह के बाद ससुराल में त्याग वैराग्य का वातावरण मिला, पहले आचार्य श्री की दीक्षा हुई फिर जेठ जी क्षुल्लक श्री मोतीसागर जी फिर बेटी ने आर्यिका श्री ज्ञानमती जी से आर्यिका श्री सुदृढ़मति जी बनीं। संघ में आर्यिका श्री चंदनामति जी हमेशा वैराग्य त्याग मार्ग पर आगे अग्रसर होने की प्रेरणा देते रहे।

नगर की त्याग परंपरा - आचार्य श्री वर्धमान सागर जी की जन्म नगरी की 3 प्रतिमाधारी मधु दीदी सनावद 22 जुलाई को दीक्षा ग्रहण करेंगी।

सनावद जिला खरगोन मध्य प्रदेश सिद्ध क्षेत्र सिद्धवरकूट, पावागिरी, उन और श्री बावनगजा जी के समीप स्थित गुलशनाबाद जो वर्तमान में सनावद नगर नाम से विख्यात है, इस सनावद नगरी को विश्वविख्यात बनाने का सौभाग्य अगर मिला है तो वह है प्रथमाचार्य चारित्र चक्रवर्ती आचार्य श्री शांतिसागर जी महाराज की मूल बाल ब्रह्मचारी पट्ट परंपरा के पंचम पट्टाधीश आचार्य श्री वर्धमान सागर जी महाराज जिन्होंने सन 1969 में मुनि दीक्षा लेकर सनावद से मुनि धर्म की शुरुआत की है तबसे अभी तक देखें तो 17 भव्य प्राणी सनावद के श्रमण दीक्षा अंगीकार कर चुके हैं। पंचोलिया परिवार की अगर बात कहें तो आचार्य श्री वर्धमान सागर जी, मुनिश्री चारित्र सागर जी, मुनि श्री श्रेष्ठ सागर जी, आर्यिका श्री सुदृदमति माताजी, आर्यिका श्री महायशमति माताजी और क्षुल्लक श्री मोतीसागर जी के बाद अब 64 वर्षीय तीन प्रतिमाधारी श्रीमती मधुबाला स्व. प्रकाश चंद जी पंचोलिया जैन 22 जुलाई को देश की सर्वाधिक संयम धारी गणनी श्री ज्ञानमती माताजी से सर्वश्रेष्ठ नारी दीक्षा ग्रहण करेंगी।

- राजेश पंचोलिया, इंदौर

डॉ. संतोष जैन
काला
गुवाहाटी

जैन समाज के जागरूक सदस्यों से निवेदन

समाज का आधार उसकी नैतिकता और जिम्मेदारियों पर टिका होता है। जब समाज में समझदार और ईमानदार व्यवसायी तथा पढ़े-लिखे लोग चुप रहते हैं, और अनपढ़, घमंडी व अत्याचारी नेता शासन करने लगते हैं, तो वे स्वयं को खुदा समझने लगते हैं। सत्ता के नशे की खुमारी जब सिर पर चढ़ती है, तो यह अच्छे से अच्छे इंसान को भी एक घमंडी और अत्याचारी नेता बना देती है। इसके बाद ये शासक अनाचार और क्रूरता की सभी हदों को पार कर जाते हैं।

सत्ता का नशा और उसका प्रभाव – जब सत्ता का नशा सिर पर चढ़ता है, तो यह व्यक्ति को अपनी वास्तविकता से दूर कर देता है। वह स्वयं को सर्वोपरि समझने लगता है और समाज के प्रति अपनी जिम्मेदारियों को नजरअंदाज करने लगता है। यह स्थिति तब और भी गंभीर हो जाती है जब ऐसे नेता अपनी मनमानी करने लगते हैं और समाज में अनाचार फैलाने लगते हैं।

ऐसे नेता न केवल समाज को नुकसान पहुंचाते हैं, बल्कि अपने पद का दुरुपयोग करके समाज की मूलभूत संरचनाओं को भी नष्ट कर देते हैं। सत्ता के नशे में चूर ये नेता अपनी सत्ता को कायम रखने के लिए किसी भी हद तक जा सकते हैं। वे गाली-गलौज, डरा-धमकाकर और नियम-कायदों को बदलकर अपने स्वार्थ साधते हैं।

अनाचार और क्रूरता की पराकाष्ठा – अनाचार और क्रूरता समाज को भीतर से खोखला कर देते हैं। यह समाज की नैतिकता और मूल्यों को कमजोर कर देते हैं। जब नेता अनाचार करते हैं, तो समाज में असमानता और अन्याय का माहौल पैदा हो जाता है। यह स्थिति तब और भी खराब हो जाती है जब समझदार लोग चुप रहते हैं और अनाचार का विरोध नहीं करते।

इतिहास गवाह है कि जब समाज ने अनाचार के खिलाफ आवाज नहीं उठाई, तब समाज ने भारी कीमत चुकाई है। तैमूर से लेकर हिटलर तक, इतिहास में कई ऐसे उदाहरण भरे पड़े हैं जिन्होंने अपनी क्रूरता और अनाचार से समाज को बर्बाद कर दिया। इन नेताओं का नाम आज भी समाज में दैत्य और असुरों के रूप में लिया जाता है।

समाज के जागरूक सदस्यों की भूमिका – समाज के जागरूक सदस्यों की भूमिका बहुत महत्वपूर्ण होती है। जब समझदार और ईमानदार लोग चुप रहते हैं, तो समाज में अनाचार और अन्याय का माहौल बन जाता है। इसलिए, समाज के जागरूक सदस्यों को चुप नहीं रहना चाहिए। उन्हें गलत कार्यों के प्रति अपनी आपत्ति दर्ज करनी चाहिए और ऐसे नेताओं को जड़ से उखाड़ फेंकने का प्रयास करना चाहिए।

जागरूक सदस्य समाज के स्तंभ होते है। उनकी जागरूकता और जिम्मेदारी से समाज में शांति और संतुलन बना रहता है। अगर वे अपनी जिम्मेदारियों को नहीं निभाते, तो समाज में असंतुलन पैदा हो जाता है और यह असंतुलन समाज को बर्बाद कर सकता है।

महाभारत का उदाहरण– महाभारत का उदाहरण हमारे सामने है। जब समाज के समझदार और ईमानदार लोग चुप रहते हैं, तो एक समय बाद महाभारत होने में देर नहीं लगती। महाभारत एक ऐसा उदाहरण है जो हमें सिखाता है कि जब समाज के लोग अन्याय के खिलाफ आवाज नहीं उठाते, तो समाज में विध्वंसकारी घटनाएँ घटित होती हैं। महाभारत का युद्ध समाज में असंतुलन और अन्याय का परिणाम था, जो समाज को बर्बाद कर गया।

सामूहिक जिम्मेदारी और नैतिकता – समाज की भलाई हमारी सामूहिक जिम्मेदारियों और नैतिकता पर निर्भर करती है। जब हम अपने कर्तव्यों को नहीं निभाते, तो यह समाज के संतुलन को बाधित कर सकता है। जिस प्रकार एक बगीचे में हर पौधे की देखभाल जरूरी होती है, उसी प्रकार समाज में भी हर व्यक्ति की भागीदारी अनिवार्य है। अगर हम अपने आसपास के अन्याय और अत्याचार को अनदेखा करते हैं, तो यह हमारी उदासीनता का परिणाम है, जो भविष्य में और भी बड़ी समस्याओं को जन्म दे सकता है।

सांस्कृतिक और ऐतिहासिक दृष्टिकोण - हमारी संस्कृति और इतिहास इस बात के गवाह हैं कि जब भी समाज ने एकजुट होकर अत्याचार का विरोध किया है, तब-तब बदलाव आया है। महात्मा गांधी ने अहिंसा और सत्याग्रह के माध्यम से हमें दिखाया कि किस प्रकार शांतिपूर्ण विरोध भी सबसे बड़े साम्राज्य को झुका सकता है। इसलिए, हमें चाहिए कि हम अपने आस-पास हो रहे गलत कार्यों के प्रति सतर्क रहें और मिलकर उनका विरोध करें।

एकजुटता और सामूहिक प्रयास – जब हम अपने समाज के लिए आवाज उठाते हैं, तो हम न केवल अपने लिए बल्कि आने वाली पीढ़ियों के लिए भी एक बेहतर भविष्य का निर्माण करते हैं। समाज की भलाई के लिए हमें एकजुट होना होगा और अपने नैतिक मूल्यों के साथ खड़े रहना होगा। एकजुटता में शक्ति होती है और यही शक्ति हमें समाज के हर बुराई से लड़ने के लिए प्रेरित करती है।

समाज की भलाई के लिए सुझाव

1. **शिक्षा और जागरूकता:** समाज में शिक्षा का प्रचार-प्रसार करना आवश्यक है। शिक्षित समाज जागरूक होता है और अपने अधिकारों और कर्तव्यों के प्रति सतर्क रहता है।
2. **समानता और न्याय:** समाज में समानता और न्याय की स्थापना करना अनिवार्य है। यह सुनिश्चित करना चाहिए कि समाज में किसी भी प्रकार का भेदभाव और अन्याय न हो।
3. **सामाजिक भागीदारी:** समाज के हर व्यक्ति को सामाजिक कार्यों में भाग लेना चाहिए। यह समाज की प्रगति और विकास के लिए आवश्यक है।
4. **अहिंसा और शांति:** समाज में अहिंसा और शांति का प्रचार-प्रसार करना चाहिए। भगवान महावीर और महात्मा गांधी के सिद्धांतों का पालन करते हुए, समाज में शांति और सद्भाव बनाए रखना चाहिए।
5. **सामूहिक जिम्मेदारी:** समाज की भलाई के लिए सामूहिक जिम्मेदारी का निर्वहन करना चाहिए। हर व्यक्ति को अपने कर्तव्यों और जिम्मेदारियों को समझकर उनका पालन करना चाहिए।

निष्कर्ष – समाज के जागरूक सदस्यों से निवेदन है कि वे समाज की भलाई के लिए जागरूक रहें और गलत कार्यों का विरोध करें। समाज का आधार हमारी संयुक्त जिम्मेदारियों और नैतिकता पर निर्भर करता है। जब हम अपने कर्तव्यों को नहीं निभाते, तो यह समाज के संतुलन को बाधित कर सकता है।

आइए, हम सब मिलकर समाज की भलाई के लिए काम करें और यह सुनिश्चित करें कि हमारे समाज में हमेशा न्याय और सच्चाई की जीत हो। गलत कार्यों का विरोध करें और अपने समाज को एक बेहतर स्थान बनाने में अपना योगदान दें। जब हम अपने समाज के लिए आवाज उठाते हैं तो हम न केवल अपने लिए बल्कि आने वाली पीढ़ियों के लिए भी एक बेहतर भविष्य का निर्माण करते हैं। समाज की भलाई के लिए हमें एकजुट होना होगा और अपने नैतिक मूल्यों के साथ खड़े रहना होगा। एकजुटता में शक्ति होती है और यही शक्ति हमें समाज के हर बुराई से लड़ने के लिए प्रेरित करती है।

आपसे निवेदन है कि समाज की भलाई के लिए जागरूक रहें और गलत कार्यों का विरोध करें। समाज का आधार हमारी संयुक्त जिम्मेदारियों और नैतिकता पर निर्भर करता है। जब हम अपने कर्तव्यों को नहीं निभाते, तो यह समाज के संतुलन को बाधित कर सकता है। जिस प्रकार एक बगीचे में हर पौधे की देखभाल जरूरी होती है, उसी प्रकार समाज में भी हर व्यक्ति की भागीदारी अनिवार्य है। अगर हम अपने आसपास के अन्याय और अत्याचार को अनदेखा करते हैं, तो यह हमारी उदासीनता का परिणाम है, जो भविष्य में और भी बड़ी समस्याओं को जन्म दे सकता है। आइए, हम सब मिलकर समाज की भलाई के लिए काम करें और यह सुनिश्चित करें कि हमारे समाज में हमेशा न्याय और सच्चाई की जीत हो। गलत कार्यों का विरोध करें और अपने समाज को एक बेहतर स्थान बनाने में अपना योगदान दें।

आहार के नियम भारतीय 12 महीनों अनुसार

चैत्र (मार्च-अप्रैल) – इस महीने में चने का सेवन करें क्योकि चना आपके रक्त संचार और रक्त को शुद्ध करता है एवं कई बीमारियों से भी बचाता है। चैत्र के महीने में नित्य नीम की 4/5 कोमल पत्तियों का उपयोग भी करना चाहिए इससे आप इस महीने के सभी दोषों से बच सकते हैं। नीम की पत्तियों को चबाने से शरीर में स्थित दोष शरीर से हटते है।

वैशाख (अप्रैल/मई) – वैशाख महीने में गर्मी की शुरुआत हो जाती है। बेल का इस्तेमाल इस महीने में अवश्य करना चाहिए जो आपको स्वस्थ रखेगा। वैशाख के महीने में तेल का उपयोग बिल्कुल न करें क्योंकि इससे आपका शरीर अस्वस्थ हो सकता है।

ज्येष्ठ (मई/जून) – भारत में इस महीने में सबसे अधिक गर्मी होती है। ज्येष्ठ के महीने में दोपहर में सोना स्वास्थ्य वर्धक होता है, ठंडी छाछ, लस्सी, ज्यूस और
अधिक से अधिक पानी का सेवन करें। बासी खाना, गरिष्ठ भोजन एवं गर्म चीजों का सेवन न करें। इनके प्रयोग से आपका शरीर रोग ग्रस्त हो सकता है।

अषाढ़ (जून/जुलाई) – आषाढ़ के महीने में आम, पुराने गेंहू, सत्तु, जौ, भात, खीर, ठन्डे पदार्थ, ककड़ी, परवल, करेला, बथुआ आदि का उपयोग करें व आषाढ़ के महीने में भी गर्म प्रकृति की चीजों का प्रयोग करना आपके स्वास्थ्य के लिए हानिकारक हो सकता है।

श्रावण (जुलाई/अगस्त) – श्रावण के महीने में हरड़ का इस्तेमाल करना चाहिए। श्रावण में हरी सब्जियों का त्याग करें एवं दूध का इस्तेमाल भी कम करें। भोजन की मात्रा भी कम लें। पुराने चावल, पुराने गेहूं, खिचड़ी, दही एवं हलके सुपाच्य भोजन को अपनाएं।

भाद्रपद (अगस्त/सितम्बर) – इस महीने में हलके सुपाच्य भोजन का इस्तेमाल कर वर्षा का मौसम् होने के कारण आपकी जठराग्नि भी मंद होती है इसलिए भोजन सुपाच्य ग्रहण करें। इस महीने में चिता औषधि का सेवन करना चाहिए।

आश्विन (सितम्बर/अक्टूबर) – इस महीने में दूध, घी, गुड़, नारियल, मुन्नका, गोभी आदि का सेवन कर सकते हैं। ये गरिष्ठ भोजन है लेकिन फिर भी इस महीने में पच जाते हैं क्योंकि इस महीने में हमारी जठराग्नि तेज होती है।

कार्तिक (अक्टूबर/नवम्बर) – कार्तिक महीने में गरम दूध, गुड, घी, शक्कर, मूली आदि का उपयोग करें। ठंडे पेय पदार्थों का प्रयोग छोड़ दें। छाछ, लस्सी, ठंडा दही, ठंडा फ्रूट ज्यूस आदि का सेवन न करें, इनसे आपके स्वास्थ्य को हानि हो सकती है।

अगहन (नवम्बर/दिसम्बर) – इस महीने में ठंडी और अधिक गरम वस्तुओं का प्रयोग न करें।

पौष (दिसम्बर/जनवरी) – इस ऋतु में दूध, खोया एवं खोये से बने पदार्थ, गौंद के लाडू, गुड़, तिल, घी, आलू, आंवला आदि का प्रयोग करें, ये पदार्थ आपके शरीर को स्वास्थ्य देंगे। ठन्डे पदार्थ, पुराना अन्न, मोठ, कटु और रुक्ष भोजन का उपयोग न करें।

माघ (जनवरी/फरवरी) – इस महीने में भी आप गरम और गरिष्ठ भोजन का इस्तेमाल कर सकते हैं। घी, नए अन्न, गौंद के लड्डू आदि का प्रयोग कर सकते है।

फाल्गुन (फरवरी/मार्च) - इस महीने में गुड़ का उपयोग करें। सुबह के समय योग एवं स्नान का नियम बना लें। चने का उपयोग न करें।

हार्दिक शुभकामनाओं सहित...
VIJAY KUMAR GANGWAL
CROWN Enterprises Pvt. Ltd.
GUWAHATI-781001
Phone : 2517274, Mobile : 98640-20611
e-mail : distribution@crownenterprisesprivatelimited.com

सुविचार

आचार्यश्री सुनील सागर जी महाराज

- आज्ञा का पालन मन की सहज सरल वृत्ति होने पर ही हो सकता है।
- मनोबल को बढ़ाने के लिये धैर्य व सहनशीलता की जरूरत है।
- उन्नति के आधार में आत्म विश्वास ही होता है।
- छोटी सी गलती भी जीवन के सुख को नष्ट-भ्रष्ट कर सकती है।
- भोजन से पूर्व शान्त भाव से विचार करना चाहिए कि मेरे द्वारा किया गया भोजन मेरी साधना में सहयोगी है।
- व्यक्ति बहुत सुनता है, बहुत विचार करता है, जब मौके पर आचरित करना हो तो सब भूल जाता है।
- सफलता के द्वार पर आकर यदि व्यक्ति द्वार खोले नहीं, धक्का नहीं दे तो वह सफल कैसे हो सकता है।
- जिस प्रकार ठहरे हुए पानी में कुछ समय बाद दुर्गन्ध आने लगती है वैसे ही ठहरे हुए विचार भी मालिन हो जाते हैं।
- महापुरूषों के आदर्श को दृष्टि में रखकर आचरण करें तो अवश्य ही हमारा कल्याण होगा।
- स्वर्ण की परीक्षा आग में तपाने पर होती है, वैसे ही व्यक्ति कितना ही आत्मशक्ति सम्पन्न हो उसकी परीक्षा तो विकट परिस्थिति में ही होती है।
- संतोष का धन बाहर कहीं से नहीं लाना पड़ता, वह तो मनुष्य के मन में सद्विचारों से स्वयं ही उत्पन्न हो जाता है।

-प्रेषक- महावीर प्रसाद अजमेरा,
संवाददाता- जोधपुर

हार्दिक शुभकामनाओं सहित...
डायनामिक
इंजीनियर्स प्रा. लि.
28, बैरकपुर ट्रन्क रोड
कोलकाता- 700002 'प.बं.'
फोन : 25577534

सागर के दो नगर गौरव संतों का ऐतिहासिक भव्य मिलन

सागर। परम पूज्य वैज्ञानिक संत आचार्य निर्भय सागर जी महाराज की प्रेरणा से सागर के बहेरिया तिगड्ढा सिद्धगुवां नेशनल हाईवे 26 से लगी हुई पहाड़ी पर विश्व की सबसे बड़ी तीर्थंकर पदम प्रभु भगवान की पद्मासन प्रतिमा बन रही है। इस वर्ष आचार्य श्री निर्भय सागर जी महाराज का पवन वर्षायोग कलश स्थापना समारोह 25 जुलाई 2024 को एवं भव्य जैनेश्वरी मुनि दीक्षा का भी कार्यक्रम होने जा रहा है। श्री तपोवन जैन तीर्थ पर जिन शासन के सर्वश्रेष्ठ संत निर्यापक श्रमण मुनिश्री सुधा सागर जी का मंगल आगमन हुआ। दोनों संघों का मिलन नेशनल हाईवे ब्रिज के नीचे हुआ। सागर शहर की जनता यह दृश्य देखने उमड़ पड़ी। तपोवन पहुंचने के उपरांत मुनि श्री ने निर्माणाधीन क्षेत्र को देखा एवं भगवान पदम प्रभु के दर्शन किए। आचार्य श्री ने तपोवन तीर्थक्षेत्र की जानकारी दी। प्रातःकाल श्रीजी का अभिषेक एवं शांति धारा की गई।

शांतिधारा करने का सौभाग्य प्रिंस जैन नेहानगर एवं अशोक जैन चितौरा वाले को प्राप्त हुआ। आचार्य श्री निर्भय सागर जी महाराज ने अपने प्रवचन में कहा अतिथि देवो भवः। साधु समाज का सबसे बड़ा अतिथि होता है। आपने अपने घरों में नगरों में अतिथियों का स्वागत किया होगा, पर आज साधु से साधु का भाई से भाई का मिलन हुआ है। एक अतिथि का दूसरे अतिथि ने स्वागत किया है। आचार्यश्री ने कहा कि सुधा सागर जी महाराज ने मुझे मोक्षमार्ग दिया है। मै उनके उपकार को नहीं भुला सकता। उपकारों को भुलाने वाला कृतघ्नी कहलाता है। उन्होंने आचार्य के गुण बतलाते हुए कहा कि आचार्य प्रश्नों को सहने वाला होना चाहिए। कोई कैसा भी प्रश्न कर दे उसका तत्काल उत्तर देने की क्षमता रखने वाला होना चाहिए। निर्यापक मुनिश्री पुंगव सुधासागर जी महाराज ने धर्म सभा को संबोधित करते हुए कहा कि जैसे एक भाई के बेटे ज्यादा हों और एक का बेटा न हो तो वो भाई अपने दूसरे भाई से एक बेटे को गोद ले लेता है। वैसे ही आचार्य अभिनंदन सागर जी महाराज ने निर्भयसागर जी को गोद ले लिया था पर खून तो आचार्य विद्यासागर जी महाराज का ही था। उन्हीं के संस्कार, उन्हीं की चर्या, उनके रग रग में समायी है। खून खून को ही दौड़ता है इसलिए आज भी हम भाई ही हैं। हम सब साधु आचार्य श्री शांति सागर जी महाराज की परंपरा के एक ही वंश, एक ही गोत्र, एक ही परिवार के है। आचार्य निर्भय सागर जी ने मुनि श्री सुधा सागर जी महाराज से प्रभावित होकर ही मोक्ष मार्ग पर अग्रसर हुए परंतु मुनि निर्भयसागर जी आचार्य हो गए इस बात को लेकर मुनि श्री सुधा सागर जी महाराज ने कहा कि बेटा यदि राष्ट्रपति बन जावे तो पिता को अपार खुशी होती है, वैसे ही मेरा रोम रोम पुलकित हो रहा है और अपार खुशी भी हो रही है। मुनिश्री ने कहा जिसके पीछे रावण होता है उसी राम की पूजा होती है। जिसके जीवन में कभी दुख संकट नहीं आता वह कभी किसी के लिए मंगल नहीं बन सकता। मुनिश्री सुधासागर जी ने तपोवन तीर्थ के लिए भी कहा कि यह तीर्थक्षेत्र एक दिन समाज का मष्तिष्क ऊँचा करेगा। संस्कारों से संस्कृति बनती है और संस्कृति से इतिहास बनता है। सागर नगर की विभिन्न कॉलोनी से आए हुए मंदिर कमेटी के सदस्यों ने मुनि श्री के चरणों में श्रीफल भेंट करके आशीर्वाद लिया।

जरूरतमंद बेटी के ब्याह में दिए सैकड़ों उपहार

मुरैना (मनोज जैन नायक)। विभिन्न स्वयंसेवी संगठनों से जुड़ी महिलाओं ने शहर के एक जरूरतमंद परिवार की बिटिया के ब्याह की आधी से ज्यादा जिम्मेदारी उठाकर समाजसेवा की अनूठी मिसाल पेश की है। इन महिलाओं ने लड़की के लिए कपड़े, ज्वेलरी और श्रृंगार सामग्री से लेकर घर गृहस्थी में काम आने वाले बड़े सामान भी जुटाए। यह तमाम उपहार लड़की और उसके परिजन को सौंप दिए गए। इसके अलावा उन्हें ब्याह में खर्च के लिए नकद धनराशि भी प्रदान की गई।

समाजसेवी भावना जैन को शहर के तुस्सीपुरा में रहने वाले एक गरीब परिवार की बिटिया के ब्याह में आ रही आर्थिक समस्या का पता चला तो उन्होंने विभिन्न स्वयंसेवी संगठनों से जुड़े लोगों के साथ मिलकर इस परिवार के सहयोग का बीड़ा उठाया। उनकी तरफ से प्रस्ताव मिलते ही जेसीआई मुरैना जागृति, लायंस क्लब एलीट, जैन सखी एवं आचार्य आनंद क्लब से जुड़े सेवाभावी लोगों ने मदद के लिए अपना हाथ आगे बढ़ा दिया। सभी के सहयोग से लड़की के लिए 21 साड़ियां, 2 जोड़ी चांदी की पायल, नेकलेस सेट, 2 सूटकेस, बैग, मेकअप किट, लहंगा-चुनरी, जेंट्स कपड़े, पानी का कैम्पर, मिक्सर ग्राइंडर, वाटर प्यूरीफायर, प्रेस, कूलर, टेलीविजन, अलमारी एवं डबल बेड आदि समान जुटाया गया। वहीं आचार्य आनंद क्लब के सुधीर आचार्य की टीम ने दरवाजे की रस्म के लिए जरूरी बर्तन उपलब्ध कराए। ये सभी उपहार लड़की और उसके परिवार के सदस्यों के सुपुर्द कर दिया गया। इसके अलावा लड़की के परिवार को 21 हजार रुपए की नकदी भी भेंट की गई, ताकि ब्याह के अन्य कार्यों को भी बिना किसी आर्थिक तंगी के पूरा किया जा सके। इस अवसर पर जेसीआई और लायंस क्लब एलीट की भारती मोदी, नीता बांदिल, ज्योति मोदी, कंचन चावला मौजूद रहीं।

बिटिया के ब्याह के लिए सहयोग की मुहिम चलाने वाली भावना जैन ने कहा कि जरूरतमंदों की मदद करना हमारा नैतिक दायित्व है। यदि हम किसी का जरा सा भी सहयोग करने के काबिल हैं तो इसका अर्थ है कि हम पर ईश्वर की कृपा है। उन्होंने कहा कि जेसीआई मुरैना जागृति, लायंस क्लब एलीट, जैन सखी संगठन से जुड़ी महिलाएं हमेशा इस तरह के सेवा कार्यों के लिए तत्पर रहती हैं। वहीं भारती मोदी ने कहा कि हमारी इस मुहिम से अगर कुछ लोगों को भी दूसरों के सहयोग की प्रेरणा मिलती है तो हमें लगेगा कि हमारा प्रयास सफल रहा। उन्होंने कहा कि हम सब आगे भी इस तरह के सेवाकार्य जारी रखेंगे, यह हमारा संकल्प है।

ज्ञानतीर्थ में जैन संत प्रणम्यसागर जी

मुरैना (मनोज जैन नायक) अर्हम योग प्रणेता जैन संत मुनिश्री प्रणम्यसागर महाराज ससंघ का ज्ञानतीर्थ पर 05 जुलाई को मंगल आगमन हुआ। ज्ञानतीर्थ पर विराजमान ब्रह्मचारिणी बहिन अनीता दीदी द्वारा प्रदत्त जानकारी के अनुसार पूज्य आचार्यश्री विद्यासागर जी महाराज के परम प्रभावक शिष्य मुनिश्री प्रणम्य सागर महाराज का अपने शिष्यों के साथ कुंडलपुर से आगरा की ओर मंगल पद विहार चल रहा है। ए बी रोड हाइवे पर स्थित ज्ञानतीर्थ जैन मंदिर में शुक्रवार 05 जुलाई को पूज्य मुनिश्री का ससंघ भव्य मंगल आगमन हुआ।

क्रिकेट - गौहत्या का खेल

पूरी दुनिया सहित भारत में जो वर्ल्ड कप, एक दिवसीय क्रिकेट, टेस्ट सीरीज, आईपीएल आदि का खेल चलता है, यह सब जीवहत्या का खेल है जिसमें बड़ी निर्दयता से धर्म के नाश पर देश की जीत का जश्न मनाया जाता है। क्रिकेट की गेंद अर्थात 'लेदर बॉल' गौमाता के चमड़े से बनती है, जिसमें भारत में बनने वाली 80 प्रतिशत गाय के चमड़े से और 20 प्रतिशत भैंस, बैल आदि जीवों की हत्या कर उनके चमड़ों से बनाई जाती है, जिसमें अकेले 1 लाख लैदर बॉल मेरठ की बी.डी.एम एण्ड संस प्राइवेट लिमिटेड हर साल बनाती है जो देश में निर्माण का 50 प्रतिशत है।

अस्तित्व की पहचान के लिए महिलाओं ने किया ध्यान

जेसीआई ने किया स्ट्रेस फ्री मैनेजमेंट प्रोग्राम

मुरैना (मनोज जैन नायक) महिलाओं के स्वयं सेवी संगठन जेसीआई मुरैना जाग्रति ने बीती शाम स्ट्रेस फ्री मैनेजमेंट प्रोग्राम का आयोजन किया। जिसमें जेसीआई मेंबर्स के साथ कई महिलाओं ने अस्तित्व की पहचान के लिए ध्यान लगाया। कार्यक्रम में एनर्जी थेरेपी के टिप्स भी महिलाओं को दिए गए। जीवाजी गंज स्थित केएस ऑफिस में आयोजित स्ट्रेस फ्री मैनेजमेंट प्रोग्राम में सुषमा गांगिल बतौर मेंटर उपस्थित हुईं। सबसे पहले जेसीआई की अध्यक्ष ललिता गोयल ने उनका स्वागत किया। इसके बाद उन्होंने महिलाओं को ध्यान का अर्थ और इसकी उपयोगिता के बारे में बताया। उन्होंने कहा कि ध्यान लगाकर हम अपने अस्तित्व को जान सकते हैं। लेकिन ध्यान का व्यापक लाभ पाने के लिए इसका सतत अभ्यास करना होगा। फिर उन्होंने महिलाओं को ध्यान मुद्रा में बिठाकर ओम की ध्वनि का उच्चारण कराया। शुरुआत निम्न स्तर से करते हुए मेंटर इसे उच्च आवृत्ति तक ले गईं तो समूचा माहौल एक खास ऊर्जा से भर उठा। ध्यान लगाने वाली महिलाओं के लिए भी यह अनुभव अनूठा था। शायद यही वजह थी कि उनमें से अधिकांश की आंखों से आंसू बह निकले। महिलाओं ने बताया कि ध्यान लगाने के बाद उनके मन को शांति का अहसास हुआ।

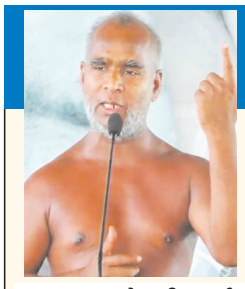

सन्मतिसुनीलम

मैं उस आत्मा रूपी देव की शरण में जाता हूं, जो सब जीवों में विद्यमान है

प्राकृत ज्ञान केसरी, चर्या चक्रवर्ती, महासंघ नायक, विश्वहितकारी, वात्सल्य मूर्ति, सरल स्वभावी, चारित्र रत्नाकर, विद्यावारिधी, क्षेत्र जीर्णोद्धारक आचार्य
श्री सुनील सागर जी महाराज के चरणों में शत शत नमन, वंदन।

-: नमनकर्ता :-

श्री दिगम्बर जैन महिला महासमिति किशनगढ़ सम्भाग
राजकुमार बड़जात्या (मरवा वाले)
मानकचंद गंगवाल (कडेल वाले)
महावीर महिला मण्डल किशनगढ़
श्रीमती सरिता पाटनी, किशनगढ़
महावीर प्रसाद अजमेरा जैन गजट वरिष्ठ संवाददाता जोधपुर
विमल कुमार बड़जात्या, किशनगढ़ (मरवा वाले)
कमल कुमार वैद (ज्वैलर्स)
श्रीमती जया पाटनी पुराना हाउसिंग बोर्ड किशनगढ़
कुशल ठोल्या - जयपुर
श्रीमती ममता सोगानी - जयपुर

आचार्य श्री सुनील सागर जी महाराज की ग्रीष्मकालीन वाचना मदनगंज-किशनगढ़ में चल रही है।

संकलन: R. K. Advertising शेखर पाटनी, राष्ट्रीय संवाददाता जैन गजट
मो - 09667168267 email: rkpatni777@gmail.com

मुनिश्री विभंजन सागर जी एवं मुनिश्री विश्वज्ञेय सागर जी का मंगल प्रवेश

महावीर तेघड़िया, साल्ट लेक-कोलकाता

कोलकाता। साल्ट लेक चैत्यालय जी से बाजे गाजे एवं उत्साही श्रावक-श्राविकाओं के साथ श्री सुमतिनाथ जिन चैत्यालय जी तेघड़िया में 23.06.2024 रविवार को हम सभी के परम सौभाग्य से 108 उपाध्याय श्री विभंजन सागर जी एवं मुनि श्री विश्वज्ञेय सागर जी का मंगल प्रवेश हुआ। चैत्यालय जी के सम्माननीय ट्रस्टीगणों के त्वरित सहयोग सहित एवं विभिन्न क्षेत्रों से बहु-संख्या में पधारे साधर्मीजनों की समवेत उपस्थिति में अभिषेक, शान्तिधारा एवं आहार चर्या का कार्यक्रम भी अत्यन्त हर्षोल्लास के साथ सम्पन्न हुआ। श्री महावीर जी तेघड़िया के माध्यम से सभी से विनम्र निवेदन भी किया कि श्री सुमतिनाथ जिन चैत्यालय जी में संघ के अल्पकालीन प्रवासकाल में निर्धारित कार्यक्रम में सहयोग देकर सभी यथोचित धर्म लाभ लेवें।

एनआईआरसी ने सीए विमल जैन को दिया यशस्वी सीए अवार्ड

दिल्ली (मनोज जैन नायक)। भारत की राजधानी दिल्ली में एन आई आर सी द्वारा आयोजित समारोह में सीए विमल जैन को यशस्वी सी ए अवार्ड देकर सम्मानित किया। विगत दिवस एन आई आर सी द्वारा यशोत्सव कार्यक्रम का आयोजन इंदिरा गांधी स्टेडियम दिल्ली में आयोजित किया गया, जिसमें अखिल भारतवर्षीय जैसवाल जैन उपरोचिया सेवा न्यास के न्यासी एवं जैन समाज के वरिष्ठ सीए श्री विमल जैन को 'यशस्वी सीए आवर्ड' से सम्मानित किया गया। सीए विमल जैन देश की अर्थव्यवस्था में जीएसटी सलाहकार (भारत सरकार) के साथ साथ धार्मिक एवं सामाजिक कार्यों में संलग्न रहते हैं। श्री जैन अहिंसा प्रभावना के सीए जगत के प्रधान संपादक होने के साथ- साथ अनेकों संस्थाओं से जुडे हुए हैं।

सीए विमल जैन के सम्मानित होने पर न्यास परिवार, सन्मति फाउंडेशन, अहिंसा प्रभावना परिवार के साथ मनोज जैन शशि, अंकित जैन, डॉ. इन्दु जैन, नीरू जैन', डॉ.अल्पना जैन, रितेश जैन, संजीव सोगानी, मनोज जैन नायक, चक्रेश जैन, सुरेश चंद जैन बाबूजी, सौरभ जैन, सुनील जैन वरवाई, दिनेश जैन टीटू, अजय जैन अजिया, मनोज जैन टिंवकल, कुंजल जैन, गोकुल चंद जैन ने बधाई प्रेषित की।

नोएडा में आचार्य श्री ससंघ को नहीं करने दिया विहार और नहीं बनने दिया जैन मंदिर, आखिर क्यों

पुनीत जैन

नोएडा में मंदिर शिलान्यास नहीं होने दिया....आचार्य वसुनंदी जी ससंघ 17 पिच्छी को विहार नहीं करने दिया, आखिर क्यूं ? नोएडा के सेक्टर 162 में आचार्य वसुनंदी जी मुनिराज ससंघ के सानिध्य में 30 जून को निर्ग्रंथ ग्रंथमाला समिति के तत्वाधान में जैन मंदिर का भव्य शिलान्यास होना था परन्तु कुछ असामाजिक तत्वों द्वारा इतना उपद्रव मचाया गया कि चारों तरफ डर व दहशत का माहौल बन गया। आजाद भारत के इतिहास में पहली बार जैन मंदिर को अपनी ही जगह में बनाने से रोका गया सिर्फ इसलिए जिससे उस क्षेत्र में दिगम्बर जैन साधुओं का आवागमन ना हो। हदें तो तब पार होती हैं जब जैन समाज ने पुलिस प्रशासन से मदद की गुहार लगाई और 29 जून की रात में लिखित शिकायत थाना में दी गई तो पता नहीं किन कारणों से पुलिस प्रशासन व अधिकारियों ने भी हाथ खड़े कर दिए, फिर वहाँ की कमेटी ने प्रशासन से जैन साधुओं का 3.5 किमी का सुरक्षित विहार कराकर हरियाणा में प्रवेश कराने के लिए निवेदन किया तो पुलिस ने पल्ला झाड़कर सुरक्षा उपलब्ध कराने से मना कर दिया जिससे जैन साधुओं को 3.5 किमी के बदले 55 किमी लंबा आगे की ओर दूसरी दिशा में विहार करना पड़ा। कितनी निंदनीय घटना है कि जैन संतों को उत्तर प्रदेश जैसे राज्य में भी विहार के लिए सुरक्षा उपलब्ध नहीं कराई गई और अपनी ही जमीन पर जैन मंदिर बनाने से रोका गया।

दुर्लभ फोटो

एम. सी. जैन, संवाददाता

यह फोटो औरंगाबाद में सिटी चौक की है...। 1946 में औरंगाबाद में आचार्य शांतिसागर महाराज जी आये थे, स्वतंत्रता सैनिक श्री माणिकचंद जी पहाड़े इन्हीं के कारण निजाम राज में आचार्य शांतिसागर महाराज जी औरंगाबाद आये थे, उन्होंने हैदराबाद जाकर के केस लड़ा था और परमीशन लाये थे। आज इन्हीं के नाम पर एम पी लॉ कॉलेज है। फोटो में माणिकचंद जी पहाड़े सफेद धोती कुर्ता टोपी में हैं।

सुमतिनाथ जिन चैत्यालय के 1 वर्ष पूरा होने पर पंचपरमेष्ठी विधान संपन्न

महावीर जी तेघड़िया, कोलकाता

कोलकाता, 30 जून। आज सुमतिनाथ जिन चैत्यालय में प्रतिष्ठाचार्य राजकुमार शास्त्री के सानिध्य में पंचपरमेष्ठी विधान बहुत धूमधाम से स्थानीय निवासियों द्वारा किया गया, इस दौरान लोगों का उल्लास देखने योग्य था। विधान में महावीर जैन, मनीष जैन, पारस जैन, दिनेश जैन, अशोक जैन, अक्षय जैन, विनोद ठोलिया, मनोज जैन, रंजीत जैन, अजय जैन, रतनलाल जैन, अनिल जैन, परनीत जैन, संजय जैन, राकेश जैन, विनय जैन कमल जैन, राहुल जैन, अनीता, सपना, सरिता, रश्मि, परणिता, श्रुति, कांता, राजकुमारी, मीना, संगीता, उषा, किरण, हेमा, पम्मी आदि उपस्थित थे। महावीर जैन ने जैन गजट को बताया कि विधान को सफल बनाने में सपना पाण्ड्या, अक्षय जैन, अनीता जैन, मनीष जैन, रश्मि जैन और महावीर जैन का भी योगदान रहा।

आचार्य गुप्तिनंदीजी का वर्षायोग धर्म तीर्थ में

एम. सी. जैन, संवाददाता

भारत गौरव, राष्ट्र संत, प्रज्ञायोगी, आचार्य गुप्तिनंदीजी का 2024 का वर्षायोग, नवनिर्मित भव्य दिव्य अतिशय क्षेत्र धर्म तीर्थ में होना निश्चित है। आचार्य गुरुवर, धर्म ग्रंथों के मर्मज्ञ अभ्यासक हैं। आप संस्कृत, प्राकृत भाषा के अधिकारी हैं, आपने अनेक धार्मिक ग्रंथ लिखे हैं।

दशलक्षण पर्व में प्रवचनार्थ विद्वान आमंत्रित करें

अखिल भारतवर्षीय दिगंबर जैन शास्त्रि-परिषद् 120 वर्ष से जिनधर्म की प्रभावना में संलग्न विद्वानों की आर्षमार्गीय संस्था है। परिषद् के द्वारा प्रतिवर्ष शताधिक विद्वान पूरे देश में प्रवचन के लिए जाते हैं। समाज से निवेदन है की शास्त्रि-परिषद् के आर्षमार्गीय जिनागम मर्मज्ञ विद्वानों को दशलक्षण आदि पर्व में प्रवचनार्थ आमंत्रित करें। समाज के पदाधिकारियों से अनुरोध है कि जल्द ही आमंत्रण भिजवाएं ताकि आपको योग्य विद्वान उपलब्ध कराने में आसानी हो सके। संपर्क सूत्र - डॉ. श्रेयांसकुमार जैन बड़ौत अध्यक्ष, मो. 9837043221, ब्र. जयकुमार निशांत टीकमगढ़, महामंत्री, मो. 7974010134,

- डॉ. सुनील जैन संचय, ललितपुर प्रचारमंत्री
मो. 9793821108

मुनि सुप्रभसागर जी का लखनऊ में होगा चातुर्मास

आचार्यश्री विशुद्धसागर जी महाराज के सुयोग्य शिष्य मुनिश्री सुप्रभ सागर जी महाराज ससंघ का 2024 का मंगल चातुर्मास का सौभाग्य लखनऊ को प्राप्त हुआ है।

निःशुल्क रोग निदान रक्त दान शिविर में 475 लोगों ने लिया स्वास्थ लाभ

सुमत लल्ला

नागपुर। अहिंसा भवन, भाजी मंडी, इतवारी, नागपुर में निःशुल्क रोगनिदान रक्तदान शिविर की शुरुआत मंगलाचरण, दीप प्रज्वलन एवं ईश्वर का स्मरण करते हुए शिविर की शुरुआत हुई। शिविर में लगभग 475 लोगों ने जाँच में वेट, बीऍमआई, बीपी, एसपी ओ, शुगर, इसीजी आदि जाँच का लाभ लिया। किम्स - किंग्सवे हॉस्पिटल नागपुर के द्वारा टीम में डॉ. शैलेन्द्र गांजेवार, डॉ. अशी परगनिहा चांडक ने शिविर में जांच के पश्चात स्वास्थ्य सम्बन्धी जानकारी दी।

इस अवसर पर शिविर के संयोजक सुमत लल्ला जैन ने जानकारी दी कि रोग निदान, रक्तदान शिविर 25 वर्षों से सेवाएं दे रहा है और अनेक संस्थाओं के सहयोग से भविष्य में भी ऐसी सेवाएं प्रदान करने का आश्वाशन दिया। डॉक्टरों की टीम ने उपस्थित रहकर सेवाएं दीं। आयुष ब्लड बैंक सेंटर ने भी अपनी सेवाएं दी। रक्तदान श्रेष्ठ दान करने में सर्वप्रथम सुरेंद्र लल्ला-एडवोकेट, अंशुल लल्ला, परेश पहेलवान, योगेश गुप्ता, सोनू नीरज लल्ला, विक्की सतभैया आदि अनेक लोगों ने रक्तदान कर जरूरतमंदों की सहायता की एवं देश सेवा का कार्य किया। शिविर सहयोगी संस्थाएं दि. जैन महासभा, जैन राजनैतिक चेतना मंच, गौ वंश उपयोगी संस्था, दि. जैन परवार मंदिर ट्रस्ट, एस एल ग्रुप, जैन निःसही संस्थान, कार्यक्रम में प्रमुख रूप से भाजपा मध्य नागपुर के

अध्यक्ष श्रीकांत आगलावे, महामंत्री बाला पालसपुरे, सुरेश आग्रेकर, सतीश पेंडारी, शरद मचाले, विजय जवेरी, विजय उदापुरकर, अनिल चूड़ीवाले, डॉ. संतोष मोदी, एड्वोकेट चैतन्य आग्रेकर, दिनेश सिंघई, मनोहर लाल आहूजा, रामअवतार अग्रवाल, पवन कंजीवाड़ा, जय मामू, प्रशांत जैन, राजेश बढ़कूर, चाँद भाई, अनिल जैन तिवरी, रवि मोदी, शिविर में विशेष सहयोग डॉ. चन्द्रनाथ भागवतकर, गिरीश विठालकर, नानाजी थेरे, सुनील लल्ला, नीरज लल्ला, रत्नेश लल्ला, महेंद्र लल्ला, चेतन फुरसुले, मोहसिन शेख, योगेश पंचबुद्धे, दीपक दुबे, सचिन, विनय, महिला मंडल - अर्चना जैन, सुधा बढ़कूर, राजेश्वरी जैन, माया जैन, कविता जैन, नीता जैन, ममता डांगरे, नीलम जैन, सुनीता जैन, शिवानी जैन। मंच का संचालन अभय जैन स्म ने किया और शिविर में पधारे सभी लोगों का आभार शशांक लल्ला एवं योगेश गुप्ता ने किया।

आचार्य श्री विद्यासागरजी महाराज का 57वां दीक्षा दीवस मनाया

आचार्य श्री का वागड़ के प्रति बहुत ही लगाव था: मुनि श्री अजीत सागरजी महाराज, संतों के आगमन से हरा भरा रहेगा वागड: आर्यिका विज्ञानमति माताजी

सुरेश चंद्र गांधी, नौगामा

बडोदिया, 30 जून 2024। वीरोदय तीर्थ क्षेत्र पर मुनि आर्यिका महासंघ का महामिलन व आचार्य श्री विद्यासागरजी का 57वां दीक्षा दीवस समारोह भक्ति भाव पूर्वक मनाया।

वीरोदय तीर्थ कमेटी अध्यक्ष मोहनलाल पिण्डारमिया व उपाध्यक्ष राजेश गांधी ने बताया कि प्रातः भगवान श्री आदिनाथ की प्रतिमा पर प्रथम कलश का सौभाग्य धनपाल लालावत, अजीत लालावत सपरिवार घाटोल, द्वितीय कलश मोहनलाल पिण्डारमिया सपरिवार आदिनाथ कॉलोनी परतापुर, तीसरा कलश हुकमीचंद शाह बांसवाड़ा व चतुर्थ कलश करने का सौभाग्य केसरीमल शाह परिवार चंदुजी का गढा को मिला। आर्यिका विज्ञानमति माताजी ससंघ के सानिध्य में श्री आदिनाथ महामंडल विधान का आयोजन किया गया। विधान में मंगल कलश व चार आराधना कलश स्थापना के साथ ही संगीतमय पूजन की गई। जिसमें महाअर्घ्य चढ़ाने का सौभाग्य बसंतलाल खोडणिया पुत्र जीतमल खोडणिया परिवार व जयन्तिलाल खोडणिया, कांतिलाल खोडणिया, रमेश चंद्र खोडणिया बड़ोदिया को प्राप्त हुआ। विधान में भगवान श्री आदिनाथ के पांचों कल्याणक के अर्घ्य चढ़ाकर भक्ति भावना व्यक्त की। मुनि श्री अजीत सागर जी महाराज के चरणों का प्रक्षालन व आर्यिका विज्ञानमति माताजी को जिनवाणी भेंट करने का पुण्यार्जन हुमड समाज अध्यक्ष दिनेश खोडणिया व राजेश पंचोरी थांदला परिवार को प्राप्त हुआ। इस दौरान अध्यक्ष मोहनलाल पिण्डारमिया व धनपाल लालावत ने दिनेश खोडणिया का सम्मान किया। संचालन प्रतिष्ठाचार्य प्रदीप भैया ने किया।

बड़ी संख्या में बैठे पूरे वागड़ के श्रद्धालुओं ने मुनि श्री अजीत सागरजी महाराज व आर्यिका विज्ञानमति माताजी के सानिध्य एवं प्रतिष्ठाचार्य प्रदीप भैया के सानिध्य में आचार्य श्री विद्यासागरजी महाराज की भक्ति पूर्वक पूजन कर सुसज्जित थाल में लिए अर्घ्य चढ़ाए

मुनि श्री अजीत सागरजी महाराज ससंघ का प्रातः सात बजे जैसे ही वीरोदय तीर्थ पर मंगल प्रवेश हुआ तो उनके स्वागत में वीरोदय तीर्थक्षेत्र कमेटी ने पलक पावडे बिछा दिए। इस दौरान आर्यिका विज्ञानमति माताजी ससंघ ने मुनि श्री अजीत सागरजी महाराज ससंघ की वंदना कर दर्शन किए। मुनि श्री अजीत सागरजी महाराज ने कहा कि आचार्य श्री विद्यासागरजी महाराज ने दो वर्ष पूर्व हमें वागड में जाने के लिए कहा था, मतलब वागड का नाम तो उनको हमेशा याद रहता था क्योंकि यहां पर धर्म प्रभावना अच्छी है, भक्ति अच्छी है इसलिए संतों का प्रवास हमेशा रहता है। यह विचार मुनि श्री ने आचार्य श्री विद्यासागरजी महाराज के 57वें दीक्षा दीवस पर वागड के श्रद्धालुओं को संबोधित करते हुए व्यक्त किए। मुनि श्री ने कहा कि आज का पावन दिवस हमारे लिए बहुत उपकारी है तथा आचार्य श्री तन से गए परंतु हमारे मन से कभी नही जाएंगे। मुनि श्री अजीत सागरजी महाराज के समक्ष जब घाटोल, बागीदौरा, तलवाडा, बडोदिया, नौगामा, परतापुर, अरथुना, आंजना, सेनावासा, चंदुजी का गढा, खांदुकॉलोनी तथा बांसवाड़ा शहर के अलावा दूर-दराज से आए भक्तों ने तथा उनकी और से अठारह हजार दशा हुमड दिगम्बर जैन समाज अध्यक्ष दिनेश खोडणिया ने वागड के 72 गांवों में चातुर्मास करने का निवेदन किया तो मुनि श्री अजीत सागरजी महाराज ने बड़ी ही मुस्कान के साथ कहा कि कहीं पर भी हो पर चातुर्मास वागड में ही हो रहा है तथा पिछले चार पांच वर्षों से वागड संतों के नाम से सूखा था पर अब मुनि व आर्यिका संघ के चातुर्मास से पूरा वागड क्षेत्र रहेगा हरा भरा। आर्यिका विज्ञानमति माताजी ने कहा कि जितना हो सके पानी को बचाओ।

इस अवसर पर वीरोदय तीर्थ अध्यक्ष मोहनलाल पिण्डारमिया, उपाध्यक्ष धनपाल लालावत, राजेश गांधी, विनोद दोसी, सुशील घोड़ा, लोकेश जैन, धनपाल खोडणिया, महिपाल खोडणिया, प्रद्युमन शाह, हुकमीचंद शाह, जीतमल तलाटी, कांतिलाल खोडणिया, मुकेश खोडणिया, चंद्रकांत खोडणिया, बसंतलाल खोडणिया, महिपाल खोडणिया, सुभाष खोडणिया, रमेश चंद्र खोडणिया, आशिष भैया तलाटी, ललीत पिण्डारमिया के अलावा बड़ी संख्या में पांच हजार से अधिक जैन समाज के श्रद्धालु उपस्थित थे। संचालन प्रतिष्ठाचार्य प्रदीप भैया सुयश अशोकनगर ने किया व आभार मोहनलाल पिण्डारमिया ने माना।

सिहोनियां में युगल मुनिराजों के सान्निध्य में होगा महामस्तकाभिषेक

मुरैना (मनोज जैन नायक)। जैन तीर्थ अतिशय क्षेत्र सिहोनियां जी में युगल मुनिराजों के पावन सान्निध्य में भगवान शांतिनाथ जी का महामस्तकाभिषेक 14 जुलाई को होगा। जैन तीर्थ अतिशय क्षेत्र सिहोनियांजी के परम संरक्षक जिनेश जैन (पूर्व अध्यक्ष नगर पालिका अम्बाह) एवं संरक्षक आशीष जैन सोनू द्वारा प्रदत्त जानकारी के अनुसार अभीक्ष्ण ज्ञानोपयोगी आचार्य श्री वसुनंदी जी महाराज के परम प्रभावक शिष्य मुनिश्री शिवानंद जी महाराज एवं मुनिश्री प्रश्मानंद जी महाराज का पद विहार बुंदेलखंड से मुरेना की ओर चल रहा है। वर्तमान में पूज्य युगल मुनिराज जैन तीर्थ

सिद्धक्षेत्र सोनागिर जी में विराजमान हैं। पूज्यश्री सोनागिर से पद विहार कर डबरा, ग्वालियर, मालनपुर होते हुए 13 जुलाई की शाम को जैन अतिशय क्षेत्र सिहोनियांजी पहुंचेंगे। क्षेत्र कमेटी द्वारा क्षेत्र की सीमा पर युगल मुनिराजों की अगवानी की जायेगी। ढोल नगाड़ों के साथ भव्य शोभायात्रा के रूप में मुनिराजों को भगवान शांतिनाथ के दरबार में प्रवेश कराया जायेगा। अतिशय क्षेत्र सिहोनियां के महामंत्री विवेक जैन बंटी ने जानकारी देते हुए बताया कि युगल मुनिराजों के पावन सान्निध्य में भगवान शांतिनाथ, कुंथनाथ, अरहनाथ का महामस्तकाभिषक होगा।

ज्ञातव्य हो कि युगल मुनिराजों का मुरैना नगर के श्री पार्श्वनाथ दिगंबर जैन पंचायती बड़ा जैन मंदिर में पावन वर्षायोग 2024 होना सुनिश्चित हुआ है। मुरेना नगर में 17 जुलाई को भव्य मंगल प्रवेश होगा एवं 28 जुलाई को वर्षायोग कलश की स्थापना होगी।

पत्रकार एम. सी. जैन की साहित्य कृति 'अंतिम उपदेश एवं आदेश' का प्रकाशन

चिकलठाणा (महाराष्ट्र)। सुविख्यात समाजसेवी, मराठी-हिंदी लेखक, 85 वर्ष के उम्र में ''सुखनेच्या तिरावर,'' ''अध्यात्म प्रकाश'' तथा ''अंतिम उपदेश एवं आदेश'' पुस्तक लिखकर एक ज्वाज्वल्यमय कीर्तिमान स्थापित किया है। 2 जुलाई 2024 को पत्रकार एम. सी. जैन तथा सौ. हेमलताजी के विवाह को 60 वर्ष पुर्ण हुये है, इस उपलक्ष में भारत गौरव, राष्ट्रसंत, आचार्य मुनि गुप्तिनंदी जी के सान्निध्य में ''अंतीम उपदेश एवं आदेश'' पुस्तक का प्रकाशन समारोह अतिशय क्षेत्र ''धर्म तीर्थ'' में सम्पन्न हुआ। आचार्य गुप्तिनंदी जी ने कहा कि 85 वर्ष के उम्र में अंतिम उपदेश एवं आदेश साहित्य निर्माण करना अत्यंत कठिन काम है। एम. सी. जैन समाज के वरिष्ठ पत्रकार एवं साहित्यकार है,

उनकी साहित्य सेवा आगे अनेक पीढ़ियों का मार्गदर्शन करती रहेगी। इस अवसर पर संघस्थ आर्यिका आस्थाश्री माताजी, क्षुल्लकजी शान्तीगुप्तजी, सौ. हेमलता जी, दिनेश सेठ, सौ. मन्जुशा, प्रतिक पाटनी, आदि उपस्थित थे।

डाक विभाग द्वारा विशेष कवर व विरूपण का अनावरण

त्रिभुवन चन्द्र जैन, महामंत्री

कानपुर। दिनांक 06 जून 2024 को बीसवीं सदी के प्रथमाचार्य चारित्र चक्रवर्ती आचार्य श्री शान्तिसागर जी महामुनिराज के आचार्यत्व पदारोहण के शताब्दी वर्ष 2023-24 कार्यक्रमों के अंतर्गत डाक विभाग द्वारा विशेष कवर व विरूपण का अनावरण प्रज्ञा श्रमण बालयोगी गुरुवर श्री अमितसागर जी मुनिराज की प्रेरणा एवं आशीर्वाद से मुख्य डाकघर कानपुर के बहुउद्देशीय हॉल में किया गया। चारित्र चक्रवर्ती आचार्य श्री शान्तिसागर जी महामुनिराज बीसवीं शताब्दी में दिगम्बर परम्परा को आगे बढ़ाने वाले प्रथमाचार्य थे।

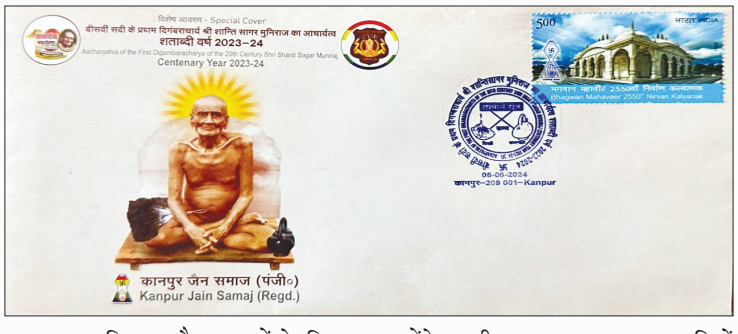

सरकार द्वारा दिगम्बर जैन साधुओं के विहार इत्यादि पर लगी रोक को उन्होंने हटवा कर पुनः दिगम्बरत्व को स्थापित किया। अपने 35 वर्षों की निर्ग्रन्थ साधना में 9,938 व्रत किये। उन्होंने अपनी तपस्या साधना ध्यान आदि में कोई भी विघ्न बाधा आने पर समता भाव से उसको सहन किया। धर्म ग्रन्थों के संरक्षण के प्रति उन्होंने विशेष प्रयास करवाये।

इस अवसर पर मुख्य अतिथि श्री सुबोध प्रताप सिंह (निदेशक डाक सेवायें), विशिष्ट अतिथि श्री शम्भुराय (चीफ पोस्ट मास्टर), मुख्य वक्ता डा. चन्द्रकान्त चौगले, सांगली, महाराष्ट्र द्वारा आचार्यश्री शान्तिसागर जी महामुनिराज के चित्र का अनावरण एवं दीप प्रज्जवलन किया गया। सभापति श्री संजय जैन अतिथि का स्वागत किया एवं आचार्य श्री के जीवन चरित्र पर संक्षिप्त प्रकाश डाला। उपस्थित अतिथियों द्वारा 20वीं सदी के प्रथमाचार्य चारित्र चक्रवर्ती आचार्य श्री शान्तिसागर महामुनिराज का विशेष कवर व विरूपण का विमोचन किया तत्पश्चात अध्यक्ष श्री धनराज सुराना जैन ने अपने विचार व्यक्त किये। महामंत्री त्रिभुवन चन्द्र जैन द्वारा धन्यवाद व आभार व्यक्त किया गया। मंच का संचालन डा. चक्रेश जैन द्वारा किया गया। इस अवसर पर मुख्य रुप से श्री अंकित जैन आगरा, श्रीमती शशि जैन आगरा, श्री प्रवीन जैन फिरोजाबाद, श्रीमती शीतल जैन फिरोजाबाद, श्री मुन्ना जैन सोनीपत, श्री मोहित जैन फिरोजाबाद व कानपुर नगर से डॉ. अनूप जैन, श्री हेम जैन, श्री अनूप जैन, श्री अनिल जैन, श्री सौरभ जैन, श्री धनंजय जैन, श्रीमती पुष्पा जैन, श्री केशवदेव जैन, श्री पारस कुमार जैन, एडवोकेट बबिता जैन, श्रीमती नीलम जैन, एकता जैन इत्यादि उपस्थित थे।

समस्या समाधान - रवि जैन गुरूजी

प्रश्न 1. गुरूजी जय जिनेन्द्र, मेरा घूमने फिरने का बहुत मन करता है बचपन से ही, क्या ऐसा मेरी जन्मपत्री में दिखता है - किशोर जैन, बड़ौदरा

उत्तर - किशोर जी, आपकी कर्क लग्न की कुंडली है और लग्न में ही केतु बैठा हुआ है, ऐसा जातक हमेशा घूमने-फिरने वाला होता है।

प्रश्न 2. गुरूजी जय जिनेन्द्र, एक समस्या को लेकर मै बहुत परेशान था, आपके बताये उपाय अपनाकर मुझे चमत्कारिक रूप से लाभ हुआ आपका धन्यवाद - आलोक जैन, साहिबाबाद

उत्तर - आलोक जी, ज्योतिषी उपाय बारिश में छाते का कार्य करते है, जिससे हमें कई बार बड़े लाभ की प्राप्ति हो जाती है।

प्रश्न 3. गुरूजी जय जिनेन्द्र, नौकरी में मन नहीं लगता, व्यापार करने की हालत नही है - रमेश, नोयडा

उत्तर - नौकरी में मन लगे इसके लिये शाम को श्री चन्द्रप्रभु चालीसा 3 बार पढ़ें तथा सूर्य उदय के समय श्री पदमप्रभु जी का ध्यान लगायें।

प्रश्न 4. गुरूजी बिटिया का मन सी.ए. करने का है, क्या वह सफल होगी - रवि जैन, लखनऊ

उत्तर - बिटिया की कुंडली में बुध उच्च का बैठा हुआ है निश्चित रूप से सफलता मिलेगी। रोजाना विमलनाथ भगवान का चालीसा पढ़ें।

गुरु जी से संपर्क सूत्र-
9990402062,
8826755078

मोबाइल को मत छोड़ो, पर कम से कम भगवान और गुरु जी के सामने तो मोबाइल का प्रयोग मत करो

अंतर्मना प्रसन्न सागरजी

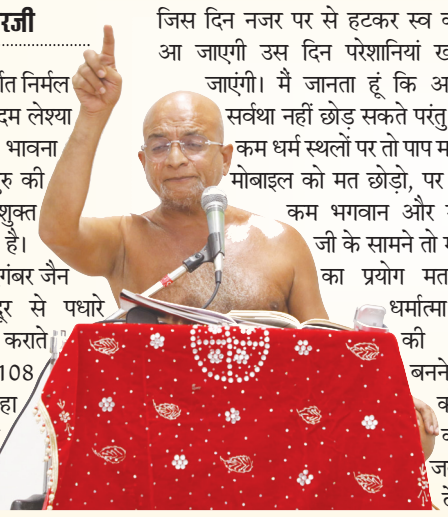

हैदराबाद। शुक्ल लेश्या अर्थात निर्मल परिणाम स्फटिक की भाँति पदम लेश्या वाला व्यक्ति सदा त्याग की भावना रखता है। धर्म, मंदिर और गुरु की ओर उसकी दृष्टि रहती है। शुक्त लेश्या मोक्ष का मार्ग खोलती है। आगापुरा स्थित श्री चंद्रप्रभु दिगंबर जैन मंदिर स्थानीय और दूर-दूर से पधारे श्रद्धालुओं को धर्म का श्रवण कराते हुए अंतर्मना आचार्य श्री 108 प्रसन्नसागर जी महाराज ने कहा कि जब तक पर नजर है तब तक जिंदगी में परेशानियां ही परेशानियां आएंगी। जिस दिन नजर पर से हटकर स्व की ओर आ जाएगी उस दिन परेशानियां खत्म हो जाएंगी। मैं जानता हूं कि आप पाप सर्वथा नहीं छोड़ सकते परंतु कम से कम धर्म स्थलों पर तो पाप मत करो। मोबाइल को मत छोड़ो, पर कम से कम भगवान और महाराज जी के सामने तो मोबाइल का प्रयोग मत करो। धर्मात्मा दिखने की नहीं, बनने की कोशिश करो। जब तक देव शास्त्र गुरु से अटैचमेंट नहीं है तब तक तुम्हारा कल्याण नहीं हो सकता। तपाचार्य प्रसन्न सागरजी महाराज ने अशुभ लेश्याओं के वर्णन के बाद अब शुभ लेश्याओं का वर्णन करते हुए कहा कि जो व्यक्ति पीत लेश्या के परिणामों से अपने मन को पवित्र कर आत्मोत्थान की ओर अग्रसर होता है वह क्रमशः पीत से पद लेश्या और शुक्ल लेश्या का अवलंबन लेता है। उपाध्याय मुनि श्री 108 पीयूष सागरजी महाराज ने कहा कि जीवन का आनंद निस्वार्थ भावना में ही है। हम बाहरी दुनिया में इतना उलझ गए हैं कि अपनों को और खुद को ही भूल गए हैं। बाहरी भौतिक सामग्री पर नजर मत डाली। अपने विचारों पर नजर रखो। परिणाम अच्छे होंगे। प्रभावी वक्ता प्रवर्तक मुनि श्री 108 डॉ. सहज सागरजी महाराज ने कहा कि नरक में तीन अशुभ लेश्याएं होती हैं, एक इंद्रीय से पंचेन्द्रीय और असंज्ञी तक अशुभ लेश्या होती है। शुभ लेश्या स्वर्ग और भीव भूमि में होती है। मुनि श्री 108 नव पदम सागरजी महाराज ने कहा कि बदला लेने की नहीं बल्कि अपने को बदलने की भावना रखो। अपनी पूजा की गाह मत करो अपितु दूसरों का सम्मान करो। गुरु से जुड़े रहो। क्षुल्लक श्री 105 नैगम सागरजी ने कहा कि जीवन में भेद विज्ञान अति आवश्यक है। अंधेरी रात है साया तो हो नहीं सकता। यह कौन है जो मेरे साथ चल रहा है। आत्मा साथ चल रही है पर आपको उसका एहसास नहीं है।

- नरेंद्र अजमेरा/पियुष कासलीवाल
संवाददाता जैन गजट

आचार्य अतिवीर मुनिराज का चातुर्मास अशोक विहार में

समीर जैन (दिल्ली)

परम पूज्य आचार्य श्री 108 अतिवीर जी मुनिराज का आगामी चातुर्मास 2024 राजधानी दिल्ली की धर्मनगरी अशोक विहार फेज-1 स्थित श्री महावीर दिगम्बर जैन मन्दिर में स्थापित होगा। इस घोषणा से समस्त समाज में हर्ष की लहर दौड़ गई और सभी ने आचार्य श्री के जयकारों से वातावरण गुंजायमान कर दिया। भगवान महावीर स्वामी के 2550वें निर्वाण कल्याणक वर्ष के अवसर पर आचार्य श्री का आगामी चातुर्मास भगवान महावीर की पावन निश्रा में ही संपन्न होने जा रहा है। पिछले कई वर्षों से अशोक विहार जैन समाज आचार्य श्री के चातुर्मास हेतु प्रयासरत है और भक्तों की अत्यन्त प्रबल भावना को देखते हुए इस वर्ष आचार्य श्री ने अपनी सहर्ष स्वीकृति प्रदान की।

धर्म सभा को संबोधित करते हुए पूज्य आचार्य श्री ने अपने गुरुदेव आचार्य श्री 108 विद्याभूषण सन्मति सागर जी महाराज को स्मरण करते हुए कहा कि वर्ष 2007 में भी गुरुवर ने अशोक विहार क्षेत्र की ओर ध्यान देने का संकेत किया था और योगा-योग से उसी वर्ष अशोक विहार में भव्यता के साथ चातुर्मास संपन्न हुआ। आज पुनः इतिहास अपने को दोहरा रहा है और फिर एक बार अशोक विहार समाज को चातुर्मास का सौभाग्य प्राप्त हो रहा है।

इस अवसर पर कृतज्ञता प्रकट करते हुए अशोक विहार फेज-1 के अध्यक्ष श्री वी. के. जैन जी ने कहा कि आचार्य श्री का अशोक विहार क्षेत्र पर भरपूर आशीर्वाद व वात्सल्य सदैव ही रहता है। 17 वर्षों के बाद पुनः अशोक विहार में चातुर्मास की स्वीकृति प्रदान कर गुरुवर ने हमें धन्य कर दिया।

डोलफिन वाटरप्रुफिंग
एडवांस टेक्नोलॉजी से छत को रखे वाटरप्रूफ, हीटप्रूफ, वेदर प्रूफ पायें सीलन, लीकेज एवं गर्मी से राहत व बिजली के बिल में भारी बचत करें।
छत व दीवारों का बिना तोड़फोड़ के सीलन का निवारण
For Your New & Old Construction

Pidilite DR. FIXIT WATERPROOFING EXPERT
Rajendra Jain
80036-14691
Dr. Fixit Authorised Project Applicator

DOLPHIN WATERPROOFING
116/183, Agarwal Farm, Mansarovar, Jaipur

स्वत्वाधिकारी 'श्री भारतवर्षीय दिगम्बर जैन महासभा' के लिये प्रकाशक एवं मुद्रक सुभाषचन्द्र गुप्ता द्वारा द इण्डियन एक्सप्रेस प्रा. लि. सी 26, अमौसी इण्डस्ट्रीयल एरिया लखनऊ उत्तर प्रदेश से मुद्रित एवं श्री नंदीश्वर फ्लोर मिल्स कम्पाउण्ड, मिल रोड, ऐशबाग लखनऊ-226004 उ. प्र. से प्रकाशित, सम्पादक -सुधेश कुमार जैन

श्री भारतवर्षीय दिगम्बर जैन महासभा
अध्यक्ष
गजराज जैन गंगवाल
मो. 09810900009
कार्याध्यक्ष
रमेश जैन तिजारिया
मोबा. 08290950000
महामंत्री
प्रकाशचंद्र जैन बड़जात्या
Mob- 09840213132
कोषाध्यक्ष
पवन गोधा
मो. 9311198985
प्रधान सम्पादक
कपूरचन्द जैन (पाटनी)
मो. 09864118950, 0 9854050969
Email- k.c.jain39@gmail.com
परामर्शक सदस्य
शिवचरणलाल जैन, मैनपुरी
मो. 09219160350
बसन्त कुमार शास्त्री, शिवाड़
मो. 08107581334
सम्पादक
सुधेश कुमार जैन, लखनऊ
मो. 09415108233, 9369025668
नन्दीश्वर फ्लोर मिल्स कम्पाउण्ड, ऐशबाग, लखनऊ- 226004 (उ0प्र0)
jaingazette2@gmail.com
सह सम्पादक (मानद)
डॉ. श्री महावीर शास्त्री, सोलापुर
मो. 09422457582
राजेन्द्र जैन 'महावीर' सनावद
मो. 9407492577
सुनील 'संचय' ललितपुर
मो. 9793821108
लखनऊ प्रधान कार्यालय प्रबंधक प्रकाशक एवं मुद्रक
सुभाषचन्द्र गुप्ता
मोबा. 09415008344
दिल्ली मुख्य कार्यालय प्रबंधक
स्वराज जैन
मोबा. 09899614433
श्री भारतवर्षीय दिगम्बर जैन महासभा, 5, राजा बाजार, खण्डेलवाल जैन मंदिर कॉम्प्लेक्स, कनॉट प्लेस, नई दिल्ली -1
011-23344668, 23344669,
digjainmahasabha@gmail.com
www.digjainmahasabha.org

जैन गजट की सदस्यता
वार्षिक (एक वर्ष) रू. 300
आजीवन (दस वर्ष) रू. 2100
निर्धारित रियायती साधारण डाक से कोरियर से मंगाने पर अतिरिक्त शुल्क- दिल्ली, उ.प्र. रू. 1000 अन्य प्रदेश रू. 1500
'जैन गजट' में विज्ञापन
देने हेतु सम्पर्क-
7607921391,
9415008344,7505102419
जैन गजट में प्रकाशनार्थ लेख, फोटो, समाचार, विज्ञापन आप ईमेल
jaingazette2@gmail.com
पर भेजें

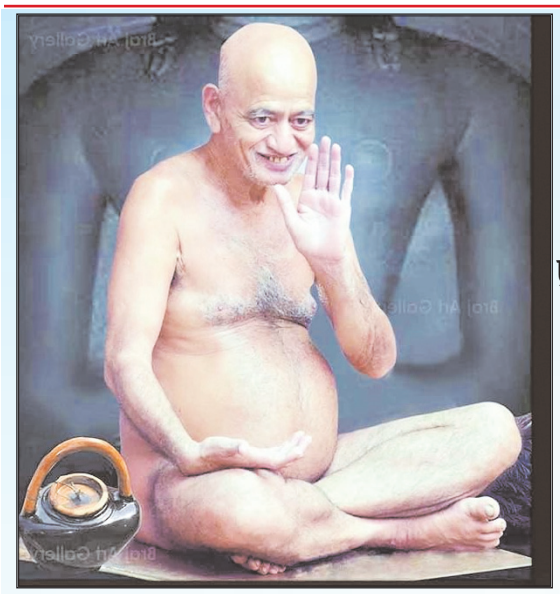

भावपूर्ण विनयांजलि

परम पूज्य वात्सल्य मूर्ति, अद्वितीय क्षयोपशम के धारी, अभीक्ष्ण ज्ञानोपयोगी, प्रखर वक्ता, कठोर अनुशासन पालक, परीषह विजेता, भक्तवत्सल, अज्ञानतिमिर हरता, बालब्रह्मचारी, श्रमण संस्कृति संवर्द्धक, भाग्योदय तीर्थ प्रणेता, दयोदय तीर्थ प्रदाता, हथकरघा के प्रणेता, इंडिया नहीं भारत बोलो द्वारा स्वदेशी आंदोलन के जन्मदाता, हिन्दी भाषा के उन्मूलक, इस युग के ज्येष्ठ एवं श्रेष्ठ संत शिरोमणि आचार्य श्री 108 विद्यासागरजी महामुनिराज का 18 फरवरी 2024 को देवलोक गमन की खबर से हम सब व पूरा विश्व भी इस महान आतम के परायण से मर्माहत हुए हैं, आज इस महाआत्मा को अपने सम्वेदन प्रगट करते हुये विनयांजलि अर्पित करते हैं।

आचार्य विद्यासागर जी महाराज के चरणों में हीरालाल बैनाड़ा परिवार की भक्ति निम्न पंक्तियों में व्यक्त होती है-

यह धन्य आपकी जिन मुद्रा, यह धन्य धन्य है निर्ग्रन्थ दशा।
मुनि नाम अलौकिक जिनचर्या, जो प्रकटाती अरिहंत दशा।
मां का अपनी बात बताना, उत्तम शिशु का कार्य रहा।
शिशु को फिर कैसे समझना, यह मां को अनिवार्य रहा।
उसी तरह जिन भक्त आपको, अपनी व्यथा सुनाते थे,
दर्शन मात्र से समाधान पा, फूले नहीं समाते थे।।

-: नमनकर्ता :-

हीरालाल बैनाड़ा- श्रीमती बीना बैनाड़ा 'आगरा'

आप परम मुनि भक्त, दानवीर, श्रेष्ठी, दृढ़ संस्कारवान, व्यवहार ज्ञान में निपुण, समाज हितैषी, इतनी ऊँचाईयों पर जाकर भी अपने मूल स्वरूप को न भूलने वाले व्यक्ति हैं, मूल स्वरूप का मतलब सरल स्वभाव रत्नो से भी महंगी मनुष्य पर्याय है और इस मनुष्य पर्याय की सार्थकता हीरालाल बैनाड़ा जैसे व्यक्तित्व से है।

हीरालाल बैनाड़ा जी का व्यक्तित्व- करोड़ों की आबादी वाले इस संसार में यदा-कदा ऐसे कर्म धन्य युग पुरूष जन्म लेते हैं जिनकी प्रेरणा और प्रतिबद्धता सर्वजन हिताय, सर्वजन सुखाय होती है। जिनका संकल्पित साहस अदम्य होता है, जो अपनी कर्मठता से औरो को भी ऊर्जायित, प्रेरित करते है। जो मशाल बनकर औरो का पथ आलोकित करते है तथा शाश्वत प्रेरणापुंज बने रहते हैं।

रचियता - डॉ. निर्मल जैन (जज), नई दिल्ली

क्रोध तरसता था आने को, माया दूर खड़ी सकुचाती
वैमनस्य, हिंसा की धारा, तुम समीप आते रूक जाती
जिस वाणी को सुनने के लिए कान लालायित रहते थे आज
उनके ही लिए कुछ कहने के लिए शब्द भी असमंजस में है।
चुक जायेगी भाषा सारी शब्दकोष सब रीत जायेंगें,
एक जन्म क्या कई जन्म भी मुझ निर्मल के बीत जाएंगें,
फिर भी पूरा हो न सकेगा हे गुरूवर! गुणगान आपका।
निर्मल की नन्हीं सी कलम प्रभु! है विराट व्यक्तित्व आपका।
मूक हुई वाणी, घर-घर में होगी मुखर मूकमाटी,
गहन अध्येता जिनदर्शन के, अमिट अजेय अस्तित्व आपका।
सारे सागर खारी होते, प्राणी प्यासा रह जाता है,
गंगा, जमुना का जल भी मिलकर खारी हो जाता है।
देख आपको जग ने जाना कुछ सागर मीठे भी होते,
अपनी एक लहर से ही मन की कड़वाहट धो देते।
पूर्ण समर्पित रत्न-त्रय को पूरे ज्ञान-दिवाकर थे,
अमृत जल से छलक रहे वो सागर विद्या सागर थे।
ज्ञान श्रेष्ठ, आचार श्रेष्ठ था सहज शांत-वृति पाई,
मिला श्रेष्ठ पांडित्य न फिर भी अहंकार की परछाई।
क्रोध तरसता था आने को, माया दूर खड़ी सकुचाती,
वैमनस्य, हिंसा की धारा, तुम समीप आते रूक जाती।
दीपक भी सूरत बन जाता, मन में धार स्व-पर कल्याण,
ऐसे ही तुम थे तो मानव पर दिखते पूरे भगवान।
कोई तुम्हें कहता पैगम्बर कितनों के तुम शंकर हो,
किसी को दिखती छवि मसीह की अपने तो तीर्थंकर सम हो।

विज्ञापन प्रेषक: R. K. Advertising मदनगंज किशनगढ़, द्वारा-शेखरचन्द पाटनी, जैन गजट राष्ट्रीय संवाददाता, मो. 09667168267 rkpatni777@gmail.com

पंजीकृत समाचार पत्र
R.N.I. NO. 59665/92
Posted at R. M. S, Char bagh, Lko. on Every Monday, wednesday and thursday
डाक पंजीयन संख्या : SSP/LW/NP/115/2024-2026
If Undelivered Please Return To : Publisher- Jain Gazette
C/o Sri Nandishwar Flour Mills Compound, Mill Road, Aish bagh, Lucknow - 226004 (U. P.) (INDIA) Mob. 9415108233, 7505102419, 7607921391 Web site- jaingaztte.com
email- jaingazette2@gmail.com whatsapp 7607921391
To,
.....
.....
.....
एक प्रति का मूल्य 3/- रुपये (कार्यालय से लेने पर)
वार्षिक सदस्यता शुल्क 300/-, दस वर्षीय आजीवन शुल्क 2100/-
(डाक/कोरियर से मंगाने पर खर्च अतिरिक्त देय होगा)

जैन गजट संबंधी सभी विवादों के लिए न्याय क्षेत्र लखनऊ ही मान्य होगा। लेखक के विचारों से संस्था या सम्पादक का सहमत होना आवश्यक नहीं है।